मार्च 2022

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

चंदूभाई (फाइल नं-1) के मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार क्या कर रहे हैं, चंदूभाई क्या-क्या कर रहे हैं, उन सब का निरंतर ऑब्ज़र्वेशन करते रहना (देखना), वह है कम्प्लीट शुद्धात्मा।

आपको अक्रम विज्ञान के साथ निरंतर जुड़े रखने के लिए दादा भगवान फाउन्डेशन प्रस्तुत कर रहे हैं

dadabhagwan टीवी ऐप

इस ऐप द्वारा आप प्राप्त कर सकेंगे
परम पूज्य दादा भगवान, पूज्य नीरू माँ और
पूज्य दिपक भाई के सत्संग कार्यक्रमों को।
जैसे कि लाइव सत्संग, स्पेशियल वीडियो,
एनर्जाइज़र, रीसन्ट सत्संग और
दादा भगवान फाउन्डेशन की

24 X 7 चैनल

लाइव सत्संग सुनिये विविध भाषाओं में

English, Deutsche, Portuguese, Español, हिन्दी, ગુજરાતી

यह ऐप
एंड्राइड टीवी और
फायर स्टिक के लिए
उपलब्ध है।

इन्स्टोल करें
''दादा भगवान टीवी ऐप''
और उठाएँ सत्संग का लाभ।

DADABHAGWAN TV

वर्ष : 17 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 197
मार्च 2022
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2022
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

चंदू से जुदापन बरताएँ, ज्ञानवाणी

संपादकीय

कोटि जन्मों के पुण्य से आत्मज्ञान द्वारा 'खुद को' सम्यक् दृष्टि प्राप्त होती है। जहाँ रोंग बिलीफ फ्रेक्चर होने से अहंकार शुद्ध होता है लेकिन क्रोध-मान-माया-लोभ के परमाणुओं को खाली करना बाकी रहता है। वे कषाय के परमाणु संपूर्ण खाली हो जाए तो संपूर्ण अनुभव दशा हो जाएगी। मूल जगह पर 'मैं' था, वह आरोपित जगह पर बैठा तब अहंकार कहलाया, वही 'मैं' वापस मूल स्वरूप में बैठ जाए तब शुद्धात्मा कहलाता है।

अनादि से विनाशी चीज़ों की तरफ मुड़ी हुई अपनी दृष्टि को ज्ञानी पुरुष खुद के अविनाशी स्वरूप की तरफ मोड़ देते हैं। फिर वह दृष्टि कभी भी नहीं जाती! ज्ञानी की दिव्यातिदिव्य देन हैं कि वे इस घोर कलियुग में आत्मदृष्टि कर देते हैं, दिव्यचक्षु देते हैं कि जो आत्मस्वरूप को ही दिखाते हैं। दृष्टि, द्रष्टा में स्थिर कर देते हैं फिर खुद को विश्वास हो जाता है कि, 'मैं शुद्धात्मा हूँ'! दृष्टि, द्रष्टा में पड़े वहाँ समग्र दर्शन अनावृत होता है और खुद को अपने शुद्ध स्वरूप की प्रतीति होती है।

खुद अपने आप से, चंदूभाई से अलग है, ऐसा कब अनुभव में आएगा? पहले नंबर के पड़ोसी चंदूभाई क्या करते हैं, उसे जानना है। आत्मा, आत्मा का फर्ज निभाए और चंदूभाई, चंदूभाई का! चंदूभाई कितने अच्छे हैं और कितने खराब हैं, वह आत्मा जानने के बाद फिर निष्पक्षपाती रूप से खुद जानेगा तब हल आएगा।

महात्माओं को कुछ संयोगों में व्यवहार के डिस्चार्ज कर्मों की असरें (खड़ी) हो जाती हैं, जो ज्ञान में नहीं रहने देती। तब दादाश्री बताते हैं कि, 'चंदू के डिस्चार्ज कर्मों की असरों से आप अलग रहे तो छूट गए, फिर कुछ स्पर्श ही नहीं करेगा। आप आत्मा और चंदूभाई नामक पुद्गल दोनों अलग ही हैं। प्रस्तुत अंक में, फाइल नं.1 चंदू के जीवन के अलग-अलग विपरीत संयोगों में जैसे कि, लोकल ट्रेन की भीड़ के समय, अपमान, अशाता वेदनीय, बुख़ार, पक्षाघात के समय, डिप्रेशन, भय, मृत्यु के समय, ऐसे प्रेक्टिकल जीवन के प्रसंगों में, 'चंदू अलग और खुद अलग', यह जागृति सेट करने का तरीका दादाश्री सिखाते हैं।

अक्रम विज्ञान, एक अद्भुत स्वयं क्रियाकारी विज्ञान है, जिससे सहज ही आंतरिक परिवर्तन आता है, आधि-व्याधि-उपाधि में समाधि में रखता है, चिंता, टेन्शन जहाँ स्पर्श नहीं करते, शंका, भय, अशांति का स्पर्श नहीं होता, ऐसा विज्ञान है। महात्माओं, अब हमें तो अनंत जन्मों के नुकसान की भरपाई एक जन्म में करनी है, तो क्या करना पड़ेगा? बस, रोजमर्रा के जीवन व्यवहार में अक्रम विज्ञान के सिद्धांतों को समझकर उपयोग में ले पाए और इस जन्म में संपूर्ण शुद्धात्मा अनुभव प्राप्त हो जाए, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

चंदू से जुदापन बरताएँ, ज्ञानवाणी

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'मैं' आरोपित जगह पर, वही है अहंकार

प्रश्नकर्ता : इस ज्ञान के बाद निरंतर अहंकार रहित कैसे हुआ जा सकता है?

दादाश्री : वही दशा हो गई है आपकी।

प्रश्नकर्ता : फाइल नं-1 का सतत निरीक्षण करने से अहंकार रहित हुआ जा सकता है?

दादाश्री : 'मैं चंदूभाई हूँ' यह ड्रामेटिक (नाटकीय)है यानी कि नाम को जानने के खातिर और 'मैं वास्तव में चंदूभाई नहीं हूँ और मैं शुद्धात्मा हूँ', वही है अहंकार रहित। पहले तो 'मैं वास्तव में चंदूभाई हूँ' ऐसा ही कहते थे, उसी को कहते हैं अहंकार और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान हो जाए, तो फिर अहंकार नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम जिसे रोंग बिलीफ कहते हैं, वह और अहम्भाव, वे एक ही हैं?

दादाश्री : रोंग बिलीफ (उल्टी मान्यता), वही अहंकार है और राइट बिलीफ (सीधी मान्यता), वह शुद्धात्मा है। मूल जगह पर 'मैं' था न, वह आरोपित जगह पर बैठा, उसे कहते हैं अहंकार। कल्पित जगह पर, जहाँ नहीं है वहाँ पर 'मैं' कहा जाए, वही इगोइज़म (अहंकार) है और मूल स्वरूप में बैठे, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उसे इगोइज़म नहीं कहा जाता। वह है ही, हकीकत है ही।

चंदू को देखने वाला, शुद्धात्मा

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि, आप शुद्धात्मा के रूप में रहकर अपने अहंकार-मन और बुद्धि को देखा करो और उन्हें शुद्ध किए बगैर आपका छुटकारा नहीं होगा। तो फिर जिस घड़ी उन्हें शुद्धात्मा पद प्राप्त हुआ, तो वे यों ही शुद्ध नहीं हो जाएँगे?

दादाश्री : वह हमारी आज्ञा का पालन करोगे तो देख सकोगे। वह देखने से शुद्ध हो जाएगा। उसे अशुद्ध देखा, अशुद्ध कल्पना की इसलिए बंध गए। उन्हें शुद्ध देखा तो फिर मुक्त हो गए।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ उसे देखते रहने से ही वह प्रक्रिया शुरू हो जाती है?

दादाश्री : हाँ, चंदूभाई क्या कर रहे हैं, वह आपको देखते रहना है। चंदूभाई की बुद्धि क्या कर रही है, चंदूभाई का मन क्या कर रहा है, उसे देखते रहना है।

चंदूभाई का सभी कुछ व्यवस्थित शक्ति चलाती है। तब आपको तो इतना ही देखते रहना है कि चंदूभाई क्या कर रहे हैं और क्या नहीं? मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, इनमें से किसी में भी आपको दखल देने की ज़रूरत नहीं है। बुद्धि क्या कर रही है, वह देखते रहना है। कुछ टेढ़ा-मेढ़ा करे तो वह भी आपको देखते रहना है। अच्छा-बुरा करे, वह भी देखते रहना है। लेकिन आपको दखल कब देना है, कि जब चंदूभाई को कोई बहुत बड़ी सांसारिक परेशानी आ जाए, तब अगर आप, 'मैं शुद्धात्मा ही हूँ,

मैं तुम्हारे साथ हूँ', ऐसा कहोगे तो वे ऑल राइट हो जाएँगे।

अत: भगवान का तरीका मैंने आपको बता दिया है। अब उसी तरह से चलो। चंदूभाई के मन-बुद्धि-चित्त क्या कर रहे हैं, चंदूभाई क्या-क्या कर रहे हैं, उन सब का निरंतर ऑब्ज़र्वेशन करते रहना (देखना), वह है कम्प्लीट शुद्धात्मा।

मुंबई की लोकल ट्रेन में शाम के समय अच्छी भीड़ होती है, तब इधर-उधर से धक्के मिल रहे हों, तब मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, सभी भीड़ में बुरी तरह फँसे होते हैं, सभी एन्गेज्ड (व्यस्त) होते हैं। उस समय 'स्वयं को' (शुद्धात्मा को) देखने और जानने का सही मज़ा आता है। तब वह अकेला पड़ जाता है और तभी उसे सही स्वतंत्रता मिलती है। अरे, जितनी भीड़ अधिक और ज्ञेय अधिक, उतनी 'ज्ञाता' की 'ज्ञानशक्ति' भी ग़ज़ब की खिलती है। जबरदस्त भीड़ में हो, तब दूसरी ओर 'ज्ञाता' भी सही मायनों में खिलता है, संपूर्ण प्रकाश में आता है। जितना स्कोप बढ़ा उतनी शक्ति बढ़ी। कुछ लोग तो सब छोड़कर जंगल में चले जाते हैं। पर अरे! सही मज़ा भीड़ में ही है। बाहर भीड़, भीतर भीड़, सब जगह भीड़ हो, तब शुद्धात्मा सही मायनों में अकेला पड़ता है। तब वह कहीं पर ज़रा सा भी तन्मयाकार नहीं रहता। हालाँकि ऐसा, स्वरूपज्ञान की प्राप्ति के बाद ही संभव है।

जानें चंदू और शुद्धात्मा के विभाग को

इस ज्ञान के बाद अब आप में क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं रहे। अब आप में किसी तरह का कुछ भी नहीं रहा। सर्वस्व शुद्धात्मा हो गए हो आप। अब मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, सब चंदूभाई का और आपको कोई लेना-देना नहीं है। और मन में *कढ़ापा* (क्लेश) करे या *अजंपा* (अशांत) करे, वह सब आपको देखते रहना है।

आपके अब घर बदल गए हैं। आपका विभाग शुद्धात्मा विभाग और यह है चंदूभाई का विभाग। तो आपको दोनों विभागों का ध्यान रखना है। अब यह मन चंदूभाई के विभाग में गया, अब आपको इस मन का उपयोग नहीं करना है। मन जो कुछ भी करे, वह दाँव-पेंच खेले या कुछ भी, उसे देखते रहना। यदि मन खराब हो और चंदूभाई परेशान हो जाएँ तो फिर पीछे से आप कंधा थपथपा देना कि, 'हम हैं आपके साथ' घबराना मत। हमारा कंधा थपथपाने वाला कोई मिलेगा नहीं इस दुनिया में। हम खुद ही थपथपाएँगे, तभी। हम शुद्धात्मा भगवान हैं। पहले कोई कहने वाला ही नहीं था न! कंधा थपथपाने वाला कोई था नहीं न!

यह अपना शुद्ध उपयोग कहलाता है। जब कोई नहीं हो तब हमें कहना चाहिए कि 'चंदूभाई, आज आपने अच्छा किया' और अगले दिन ज़रा चिढ़ जाए तो कहना चाहिए कि 'भाई इस तरह चिढ़ना अच्छा नहीं है, अत: प्रतिक्रमण करो।' होता है या नहीं होता ऐसा? बस, इतना ही करना है हमें। आप पहचानते हो या नहीं पहचानते फाइल नंबर वन को?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अच्छी तरह से। दादा के पास आने के बाद से इस पड़ोसी को अच्छी तरह से पहचान गए।

दादाश्री : बचपन से पहचानते हो? उसका जीवन चरित्र पहले से पूरा जानते हो या नहीं जानते?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : तो फिर आपको उससे कहना है कि 'भाई, अब ऐसा नहीं चलेगा। अब ऐसे चलो। अभी तक तो हम सो रहे थे, तो आपका चल गया। लेकिन अब हम जाग ही रहे हैं। अब

जाग गए हैं, तो चलो अब पिछली बातों का दंड नहीं देंगे आपको लेकिन अब जाग गए हैं तो हमारी मर्यादा रखो।' तो वे इतनी अच्छी मर्यादा रखेंगे। वास्तव में मर्यादा रखेंगे। यह तो ऐसा है कि कोई बताने वाला होना चाहिए। क्योंकि अपनी उपस्थिति में अपने घर पर उन सभी ने खाया है उसके बाद भी यदि वे अपने नहीं बनेंगे तो किसके बनेंगे?

हम पड़ोसी, नहीं हैं मालिक

जागृत हो गया आत्मा, इतना ही चाहिए हमें। तेरा जागृत हुआ है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : चलो! अब, सब से पहले तो घर में क्लेश, कलह वगैरह कुछ भी नहीं रहना चाहिए। क्योंकि आप शुद्धात्मा हो गए और चंदूभाई अलग हैं। अगर चंदूभाई वाइफ पर चिढ़ जाएँ, तब चंदूभाई से कहना, 'ऐसा क्यों कर रहे हो? पूरी ज़िंदगी ऐसा ही किया है।' आपको अपने आपको *ठपका* (फटकारना) देना है। एक-दूसरे को *ठपका* दोगे तो क्लेश होगा। आपको चंदूभाई से कहना है, नहीं हो सकेगा? चंदूभाई से कहना, 'ऐसा क्यों कर रहे हो? घर में तो एक फैमिली है अपनी!'

जहाँ गलत हो जाए वहाँ पर *ठपका* देना चाहिए। कंधा थपथपाना और *ठपका* देना। फिर कंधा थपथपाकर कहना, 'हम आपके साथ हैं।' ऐसे करते-करते सबकुछ राह पर आ जाएगा।

आप जो करते हो, वह मुश्किल है। जबकि यों तरीके से करना आ जाए तो आसान है सब। यह तो उलझन भरा कर देते हो। ऐसा सब तो बहुत समय तक किया। अभी रहने दो न, वह उलझन। उलझन तो कठिन कहलाती है।

कभी यदि बहुत हुआ तो आप *ठपका* देना कि, 'चंदूभाई क्यों यह तूफान मचाया है? ये लक्षण क्या अच्छे कहे जाएँगे? ऐसा क्यों करते हो?' लेकिन अपने हाथ में कोई सत्ता ही नहीं है न! लेकिन हम इससे अलग हो गए। हम ज्ञाता-द्रष्टा। पड़ोसी के तौर पर सलाह देते हैं, उतना ही। मालिकी ही नहीं है न! मालिकी हो तभी ज़िम्मेदारी रहती है न! यह 'नो रिस्पोन्सिबिलिटी।' चंदूभाई जो कुछ भी करें वह आपकी रिस्पोन्सिबिलिटी नहीं है, उस प्रकार से यह ज्ञान दिया है।

रोंग सीट में बैठने से लगता है शॉक

प्रश्नकर्ता : दादा, चंदूभाई को जो करना है और चंदूभाई को जो करना चाहिए, वे दोनों चीज़ें अलग हैं। उदाहरण के तौर पर चंदूभाई को सिनेमा देखने जाना है और घर में खूब मेहमान आए हुए हों तो उसे पता है कि घर पर काम करना चाहिए लेकिन उसमें उसकी सिन्सियरिटी नहीं है, तो इसमें सिन्सियरिटी कैसे लाई जाए?

दादाश्री : आप थोड़ा धीरज रखो और जो हो रहा है, उसे 'देखते' रहो तो बहुत हो गया। अर्थात् कम्प्लीट सिन्सियरिटी आ गई।

प्रश्नकर्ता : लेकिन चंदूभाई ऐसे हैं कि आग में ही हाथ डालने जाते हैं।

दादाश्री : नहीं। तब भी आपको 'देखना' चाहिए कि चंदूभाई ने कितना हाथ डाला, इतना हाथ डाला या इतना डाला, वह 'देखना' है। आप तो क्लियर हो, मैंने आपको क्लियरन्स वाली जगह पर बैठाया हुआ है। आप क्यों अनक्लियर हो जाते हो? आप किस स्थिति पर बैठते हो? रिज़र्वेशन पर न! जहाँ आपका रिज़र्वेशन किया है, वहाँ बैठते हो या अनरिज़र्व्ड जगह पर बैठते

हो? चंदूभाई तो शौक़ीन हैं इसलिए अनरिज़र्व्ड जगह पर भी बैठ आएँ ऐसे हैं।

प्रश्नकर्ता : वह जो पराई सीट पर बैठ जाते हैं, तो किस तरह वहाँ पर न बैठें और किस तरह आत्मा को ही पकड़े रहें? यानी कर्तापन में आ जाते हैं बार-बार।

दादाश्री : उस सीट पर बैठ गए और शॉक लगे तो समझ जाना कि यह अपनी नहीं है। अगर शॉक लगे तो उठ जाना चाहिए। जहाँ शॉक लगे, वह कुर्सी अपनी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : शॉक लगता है फिर भी बैठे रहते हैं।

दादाश्री : तो मज़े करो। मौज करो और पकोड़े खाओ।

प्रश्नकर्ता : शॉक लगता है लेकिन उठता नहीं है, तो फिर कैसे उठेगा? क्योंकि वह ज्ञाता-द्रष्टा नहीं रह पाता तो वह किस तरह रहना चाहिए?

दादाश्री : जो उठते नहीं हैं, उन्हें आप देखते हो न! जो नहीं उठते हैं, वह आप नहीं हो। एक 'चंदूभाई' है और एक 'आप' हो। जो नहीं उठते हैं, वे चंदूभाई हैं। चंदूभाई से कहना, ''चलो सोए रहो। बैठना हो तो बैठ जाओ भाई, यदि अच्छा लगे तो! मैं 'देखता' रहूँगा और आप बैठे रहो।'' सॉल्यूशन (हल) तो होना चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : यानी कि जो कुछ होता है, उसे *नोंध* (नोट) करते रहें?

दादाश्री : सभी क्रियाओं को 'देखना' है। वह यदि किच-किच करे तो उसे भी आपको देखना है कि, 'यह भी मेरा स्वरूप नहीं है', कहना। ऐसा है दादा का यह ज्ञान। ऊपर कोई नहीं, विदाउट बॉस। *ऊपरी* के भी *ऊपरी* हैं दादा भगवान!

प्रश्नकर्ता : यानी किच-किच करता है, वह कौन सा भाग है?

दादाश्री : वह दूसरा भाग है, वह चंदूभाई के पक्ष वाला।

प्रश्नकर्ता : यानी वह जो किच-किच करता है, उसे भी देखना है?

दादाश्री : उसे भी देखना है!

प्रश्नकर्ता : यानी जो देखते हैं, वे तो कुछ बोलते ही नहीं हैं, सिर्फ देखते ही हैं।

दादाश्री : जो देखता है उसका कोई *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक) नहीं है। उसे कोई डाँटने वाला नहीं है, कुछ भी नहीं है। अनंत शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। लेकिन चंदूभाई का रक्षण करते हो न, इसलिए सारी शक्तियाँ आवरण में छुपी रहती हैं। रक्षण करते हो न, चंदूभाई का? खुले आम करते हो न? इसीलिए शक्तियाँ नहीं खिलतीं! यदि इन आज्ञाओं का पालन करके रहोगे तब भी कभी समाधि नहीं जाएगी। आप अपनी कुर्सी पर और चंदूभाई अपनी कुर्सी पर बैठे रहेंगे। आप चंदूभाई की कुर्सी पर बैठने जाते हो, उसी से यह परेशानी है। पहले की आदत पड़ी हुई है वह!

आपको तो बाहर से हटकर खुद की सीट पर बैठना है। अब अपनी सीट कौन सी है? अंदर चार-पाँच तरह की सीटें हैं। तो अपनी कौन सी सीट है? जहाँ पर एकदम ईज़ी लगे, वह अपनी सीट है। ज़रा सी भी चुभन लगे तो जानना कि यह दूसरी सीट आई। चुभे तो समझ जाना या फिर शॉक लगे तो समझ जाना कि यह शॉक लगा। उन सभी सीटों पर नहीं बैठकर, अपनी सीट पर बैठना।

कोई-कोई तो मक्खन लगाता है, 'चंदूभाई साहब, आप तो बहुत लायक इंसान हो, बहुत अच्छे हो।' लेकिन जब वह लगाए तब क्या हमें लगाने देना है? चंदूभाई, वह अपनी सीट नहीं है। वहाँ से तो दादा ने हटा दिया है। 'मैं चंदूभाई हूँ', इसीलिए तो मार खा रहे थे।

कोई भी *भोगवटा* (सुख या दुःख का असर, भुगतना) आए तो समझ में आएगा कि, मैं दूसरी सीट पर बैठा हूँ, यह सीट मेरी नहीं है। तब वहाँ से उठकर वापस शुद्धात्मा की सीट पर बैठ जाना है। अपनी सीट पर बैठ जाना है लेकिन तू तो वहाँ बैठा रहता है, ऐसे जैसे कि डबल चार्ज देना हो! मन कोई भी उल्टा विचार करे कि तुरंत ही समझ जाना कि इस दूसरी, गलत सीट पर हूँ, अपनी सीट पर नहीं हूँ। खुद की सीट पर चले जाना तुरंत। बहुत देर बैठा रहता है, नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। ऐसा होता है।

दादाश्री : इसीलिए तेरा चेहरा बिगड़ा हुआ दिखाई देता है। मैंने कहा, 'यह चेहरा क्यों बिगड़ा हुआ है?' कोई भी अड़चन आए, तो फिर अपनी खुद की सीट पर चले जाना तुरंत। जो दोष हो चुके हैं, उनके लिए फिर माफी माँग लेना।

इस दुनिया में उलझने जैसा नहीं है। यदि कोई उलझन होने लगे या शरीर में कुछ परेशानी होने लगे तो उठकर तुरंत अपनी कुर्सी पर बैठ जाना। उसे 'देखते' रहना। कहना 'चंदूभाई, क्यों उलझ रहे हो आप?'

यह शुद्धात्मा का और यह 'चंदू' पड़ोसी का

प्रश्नकर्ता : खुद का जो स्वभाव है, चंदूभाई का, उसका पृथक्करण कैसे करें?

दादाश्री : चंदूभाई का और आपका क्या लेना-देना? आप तो शुद्धात्मा बन गए न! चंदूभाई तो पड़ोसी है, फाइल नंबर वन। आपको क्या लेना-देना? उसका कोई क्लेम हो तो मुझे बताओ। जुदा हो गए हो आप। अलग होने के बाद, दो भाईयों के बीच खेत का बँटवारा करने के बाद दूसरी तरफ की भिंडियाँ कोई नहीं लेगा, यदि बँटवारा होने के बाद ले लेंगे तो दोनों भाई झगड़ा करेंगे। बँटवारे से पहले वे ले सकते थे सबकुछ, जब तक साझे में था तब तक। बँटवारा होने से पहले ही झंझट है, बँटवारा होने के बाद नहीं।

प्रश्नकर्ता : जब तक बँटवारा नहीं होता, तब तक सबकुछ साझे का ही समझते हैं न!

दादाश्री : साझा समझकर ही यह सब किया। उसके लिए मैंने डिमार्केशन लाइन भी डाल दी है। अब हमेशा के लिए पहेली सुलझ जाएगी। लेकिन फिर भी कहता है, 'मुझे खाँसी हो गई।' अरे, खाँसी किसे हुई है, वह जानना है।

प्रश्नकर्ता : जानने से *अशाता* (दुःख-परिणाम) वेदनीय, *शाता* (सुख-परिणाम) वेदनीय में बदल जाती है न?

दादाश्री : बदल जाती है न, तुरंत ही। वेदनीय गुण पड़ोसी का है, अब वेदनीय गुण अपना नहीं है। हम सभी निर्लेप हैं। निर्लेप को कुछ भी नहीं होता। आपको खाँसी आए तो ऐसा लगना चाहिए कि, खाँसी आई है। मुझे आई, ऐसा नहीं लगना चाहिए। पड़ोसी को खाँसी आ रही है, वह ज़्यादा हो गई है, ऐसा लगना चाहिए। अनादि से यह उल्टा अभ्यास अर्थात् पुरानी आदत पड़ी हुई है। अतः आपको अनादि का अभ्यास बदलना पड़ेगा न!

प्रश्नकर्ता : जानने से फिर वेदन करना रुक जाता है क्या?

दादाश्री : नहीं, जानने से तो तन्मयाकार नहीं हुआ और इसीलिए उसे खुद का वेदनफल नहीं मिलता, जानने का ही फल मिलता है। यह सब क्या हो रहा है शरीर में, वह सब देखते रहना है आपको। 'हम शुद्धात्मा हैं', जो *लक्ष* (जागृति) बैठ गया है वह और अंदर शरीर में क्या हो रहा है, उसे देखते रहना है। पैर में टीस उठे न, तो उसे भी देखते रहना है। दाढ़ दु:खती है तो उसे भी देखते रहना है। दु:खती है तो टेलीफोन तो पहुँचता है न। सच में टेलीफोन भी पड़ोसी को पहुँचता है लेकिन साथ ही यदि ऐसा हुआ कि 'मुझे दर्द हुआ', तो वहाँ शुरू हो जाएगा। 'मुझे नहीं, दाढ़ को दर्द हो रहा है' ऐसा कहना। हाँ, आपको कहाँ दर्द होता है? यदि 'मुझे कहा' तो बहुत सीधा असर होता है। हम आत्मा स्वरूप हुएँ, उसके बाद 'मुझे' का आरोपण किस पर करें? तो मुझे दर्द हो रहा है, वह क्या है? अत: आपको ऐसा कहना चाहिए कि, 'चंदूभाई को दाढ़ दु:ख रही है।'

थर्मामीटर रूपी आत्मा ज्ञायक, नहीं है वेदक

प्रश्नकर्ता : दादा, अब खुद की भूलें तो दिखाई देती हैं लेकिन शारीरिक पीड़ा के समय थर्मामीटर जैसा नहीं रहता और दु:ख का भोगवटा आता है।

दादाश्री : नहीं! दु:ख रहें तो फिर आत्मा ही नहीं है न! आप शुद्धात्मा हो। आपकी दृष्टि में दु:ख है ही नहीं लेकिन दु:ख लगता है वह आप प्रतिनिधि स्वरूप हो जाते हो, प्रतिनिधि का दु:ख आप स्वीकार कर लेते हो।

कहीं भी जानकार सेफसाइड से बाहर नहीं जाता। अब, वास्तव में खुद जानकार है, खुद जानता है। यह तो दाढ़ दुखती है तो कहता है, मेरी दाढ़ दु:ख रही है। अरे दाढ़ को, दाढ़ दु:खती है। तू जानता है कि भाई, यह कितनी दु:ख रही है! तू जानता है कि दाढ़ ज़्यादा दु:ख रही है या दाढ़ कम दु:ख रही है। कम हो गई उसे भी जानता है। 'अब अच्छा है', कहता है। अरे भाई, वही की वही है। बढ़ रही थी उसका भी जानकार था और कम हुई उसका भी जानकार है, आत्मा थर्मामीटर है। आत्मा वेदक नहीं है। शास्त्रकारों ने वेदक लिखा है, क्रमिक मार्ग में। वे ऐसा कहते हैं कि यह आत्मा ही भुगतता हैं और क्रमिक मार्ग में भुगतता है, अहंकार रहा है न! उसमें अहंकार साथ में रहता है और धीरे-धीरे अहंकार कम होता जाता है। अपना अहंकार खत्म करने के बाद हममें वह वेदक नहीं रहता, ज्ञायक रहता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ज्ञायक रहता है।

दादाश्री : हाँ, थर्मामीटर जैसा है न! उसे (आत्मा को) वेदकता नहीं होती।

थर्मामीटर को नहीं चढ़ता बुखार, जो होता है उसे जानता है

यानी मैंने जो शुद्धात्मा दिया है, वह थर्मामीटर है। वह तो, कितना दुख रहा है, बढ़ा उसका जानकार है, कम हुआ उसका भी जानकार है। तू थर्मामीटर है, थर्मामीटर को बुखार नहीं चढ़ता। जो जानता है कि कम-ज़्यादा हुआ क्या उसे बुखार चढ़ता होगा? लेकिन ये लोग कुछ भी मान बैठे हैं, वे थर्मामीटर को बुखार चढ़ाते हैं! थर्मामीटर को बुखार चढ़ा है, कहते हैं। डॉक्टर का कितना खराब दिखाई देगा, नहीं? डॉक्टर का खराब दिखाई देगा न, थर्मामीटर को बुखार चढ़ा कहे तो ?

थर्मामीटर को बुखार नहीं चढ़ता कभी

भी। डॉक्टर को चढ़ता है, मरीज़ को चढ़ता है लेकिन थर्मामीटर को बुखार नहीं चढ़ता। आत्मा थर्मामीटर है। तो अंदर क्या हुआ है ? तब कहता है, 'जला है'। तो 'कौन जला?' तब कहता है, 'मैं जला'। तब पूछे, 'तू जला?' फिर से पूछे कि, 'कौन जला'? तब कहता है कि, 'यह शरीर जला।' आत्मा थर्मामीटर है। दु:ख बढ़ा, घटा, उसका जानकार है। तुरंत पता चलता है कि, दु:ख घटने लगा है, अरे! बढ़ने लगा है। अरे भाई, तू थर्मामीटर को इसमें क्यों डाल रहा है ? हम पूछें, 'अब कैसा है ?' तब कहता है, 'अब घटता जा रहा है।' तब फिर जानकार कौन है ? यह जिसका दु:ख कम हो रहा है, वह ऐसा जानता है या थर्मामीटर जानता है यह ? दु:ख कम-ज़्यादा होता है न, लेकिन 'मुझे दर्द हो रहा है', वह रोंग बिलीफ है और कम-ज़्यादा होता है, वह *पुद्‌गल* (अहंकार) को होता है। उसे आत्मा तो जानता ही है कि यह बढ़ा और यह घटा। यदि आप दादा द्वारा दिए गए आत्मा रूप रहते हो, तो आपको कुछ भी स्पर्श नहीं करता और आपको पहले की प्रेक्टिस है न इसलिए थोड़ा उसमें घुस जाते हो तब ज़रा असर हो जाता है। उसे फिर तुरंत धो देना पड़ता है। कभी भी ये तो हाईवे पर घूमे नहीं है और नया-नया हाईवे है इसलिए फिर उसे उलझन हो जाएगी न! धीरे-धीरे प्रेक्टिस करेगा तो फिर ठिकाने पर आ जाएगा। बाकी, आत्मा खुद थर्मामीटर हो गया फिर रहा क्या? खुद, क्या हकीकत है, वास्तविकता है, वह सब जानता है।

वे भाई सारी बातें कर रहे थे तब मैंने कहा, 'थर्मामीटर को ऐसा कैसे हो सकता है?' तब कहें, 'हाँ, वह नहीं होना चाहिए। मैंने कहा, 'थर्मामीटर स्टेज में नहीं आना चाहिए, यह सब?'

मार खाते ही खुद चला जाता है शुद्धात्मा की गुफा में

प्रश्नकर्ता : ज्ञान के बाद हम देह के संग से असंग हुए, तो देह के कर्म कितने भुगतने पड़ेंगे ?

दादाश्री : देह का संग तो तीर्थंकरों को भी रहता है। उन्हें भी (महावीर भगवान को) कानों में कीलें ठोकी गई थीं, वह भी वेदना पड़ा, वह भी हिसाब है। देह का आयुष्य कर्म हो उसे पूर्ण करना पड़ता है, फिर मोक्ष में जा सकते हैं। देह में रहने के बावजूद भी असंग और निर्लेप रहा जा सके, ऐसा है वीतरागों का विज्ञान!

प्रश्नकर्ता : दादा, तो जब तक शरीर का असर अहंकार को होता है तब तक वह जितना अलग होना चाहिए उतना अलग नहीं हुआ है, वह एक थर्मामीटर (मापदंड) है न?

दादाश्री : अहंकार इसमें है ही कहा? यह तो मृत अहंकार है। मृत अहंकार की मूछें नहीं हिलती? पवन से मूछें हिले तो वह जीवित नहीं कहा जाता, मृत अहंकार है।

प्रश्नकर्ता : मृत तो है लेकिन शरीर की असरें उसे अनुभव में तो आती हैं न? आज मुझे कोई थप्पड़ मारे तो मुझे अनुभव में तो आएगा न, कि मुझे किसी ने मारा?

दादाश्री : नहीं, उसे कहाँ लगनी है ?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा के तौर पर जब सोचूँ तब नहीं लगें, वह ठीक है लेकिन जो लगती है वह किसे लगती है ?

दादाश्री : चंदूभाई को तो लगेगी ही न! आप उस समय चंदूभाई हो जाओगे तो लगेगी,

(शुद्धात्मा की) गुफा से बाहर निकलोगे तो! लोग मारें लेकिन जब मारें तब शुद्धात्मा हो जाओ। मार खाने से पहले आप चंदूभाई हो गए हो लेकिन मार खाते समय आप शुद्धात्मा हो जाओ। उस समय गुफा में घुस जाओ। 'मार खानी पड़ी न अभी' कहना, चंदूभाई को।

लेपायमान भावों के सामने ज्ञाता-दृष्टा

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें शरीर में वेदना हो रही हो तो फिर ये सामायिक करने का मन नहीं होता, चरणविधि करने का मन नहीं होता, तो क्या?

दादाश्री : वह नहीं हो सके तो हर्ज नहीं है। वेदना होने पर उसे देखते रहें, तो उसमें सब आ गया। चरणविधि, सामायिक सबकुछ आ गया।

प्रश्नकर्ता : दादा, स्वभाव फिर चिड़चिड़ा हो जाता है।

दादाश्री : किसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है? चिड़चिड़ा हो जाए उसे भी आपको देखते रहना है। देखो चिड़चिड़ा हो गया न, कहना।

प्रश्नकर्ता : कोई कुछ बोले न, तो यों सहन नहीं होता।

दादाश्री : लेकिन किसे सहन नहीं होता है? सहन नहीं होता है, उसे देखना है आपको। कैसा बोल रहा है?

प्रश्नकर्ता : यानी कि मैं क्या कहना चाहता हूँ दादा, कि यह अंदर जब जल रहा होता है तब ऐसा लगता है कि फायदा होने के बजाय, ऐसा सब दिखाई दे रहा है। ऐसे सारे परिणाम आते हैं यानी कि कुछ भूलें हो रही हैं न?

दादाश्री : यही भूल हो रही है। ऐसा करके वापस वही का वही हो जाता है। अंदर सहन नहीं होता और फलाना नहीं होता और चैन नहीं पड़ता लेकिन क्या हर्ज है, आत्मा को चैन की ज़रूरत ही नहीं है। सहन करना भी आत्मा के लिए होता ही नहीं है। शुद्धात्मा शुद्ध ही है। ऐसा-वैसा कुछ है ही नहीं। वह इन सब का ज्ञाता-द्रष्टा है। यह सब जो हो रहा है, उसका ज्ञाता-द्रष्टा है। ये सारे तो लेपायमान भाव कहे जाते हैं। उन्हें सिर्फ देखना-जानना ही है। देखा-जाना उससे संयम परिणाम हुआ और फिर संयम चारित्र आता है।

महावीर भगवान सिर्फ जानते ही थे। एक खटमल उन्हें काटे तो उसे वे सिर्फ 'जानते' ही थे, वेदते नहीं थे। जितना अज्ञान भाग है, उतना वेदते हैं। आप श्रद्धा से शुद्धात्मा हुए हो, अब 'ज्ञान' के अनुभव से आत्मा हो जाओगे, तब सिर्फ 'जानना' ही रहेगा। तब तक वेदन है ही। वेदन के समय तो हम आपसे कहते हैं न कि दूर बैठना, अपने 'होम डिपार्टमेन्ट में!' ज़रा-सा भी हिलना-डुलना नहीं। चाहे जितनी घंटियाँ बजाए फिर भी 'होम डिपार्टमेन्ट' मत छोड़ना। भले ही घंटियाँ बजाए! बारह सौ घंटियाँ बजाए तो भी हम किस लिए अपना 'ऑफिस' छोड़ दें?

मन के भय के सामने शुद्धात्मा की जागृति

कहीं पर एक्सिडेन्ट हो चुके हो, ऐसी जगह से गुज़रना हुआ तो वहाँ मन आपको कहेगा कि, 'एक्सिडेन्ट हो जाएगा तो?' तब आपको जानना है कि अभी मनरूपी रडार ऐसा बता रहा है। इसलिए 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा करके शुद्धात्मा में चले जाना है अंदर। फिर ऐसी जगह से गुज़र गए, उसके बाद आप बाहर निकलना। या फिर बाहर भय जैसा हो

तो हमें शुद्धात्मा की गुफा में चले जाना चाहिए। और उस समय एक्सिडेन्ट हो जाए तो हम शुद्धात्मा में ही रहे, इसलिए और कोई नुकसान ही नहीं न! मन और कुछ नहीं करता, सिर्फ दिखाता ही है, उसमें हमें क्या नुकसान? इस जगत् के लोगों को क्या होता है? 'एक्सिडेन्ट हो जाएगा', 'कहा कि खुद तन्मयाकार। तब वही खुद, एक्सिडेन्ट जैसा हो जाता है। हमने आत्मा को अलग किया है इसलिए तन्मयाकार नहीं होता। हम उसके ज्ञाता-दृष्टा ही हैं। लेकिन रडार यदि बताए तो शुद्धात्मा की गुफ़ा में चले जाना।

प्रश्नकर्ता : यह मन जब बताता है तब उसके कुछ पर्याय होंगे तभी बताता है न?

दादाश्री : आपको चेतावनी देता है और जैसा उसे लगता है, वैसा आपको बताता है, उसमें उस बेचारे का क्या गुनाह? उसे संयोग वैसे लगते हैं न, इसीलिए हमें चेतावनी देता है। वर्ना, नहीं बोलता लेकिन सभी संयोग जैसे दिखते हैं वैसे नहीं होते हैं। लेकिन उसे तो खुद को जैसा दिखता है वैसा बता देता है। वह उसका फर्ज़ है। मन ड्यूटी बाउन्ड (फर्ज़ से बंधा हुआ) है। यानी रडार की ज़रूरत तो है ही न! जबकि लोगों को यह रडार निकाल देना है। अरे, माइन्ड के बिना तो कैसे चलेगा? माइन्ड की ज़रूरत तो है ही। वह भय सूचित करता है या फिर आनंद की जगह हो तो वहाँ भी वह बताता है कि बहुत अच्छा, आनंद की जगह है। यानी कि वह रडार का काम करता है।

जगत् के लोग क्या कहते हैं, 'ऐसा भय मत दिखाओ।' उन्हें मन भय दिखाए, वह अच्छा नहीं लगता। लेकिन हमें यदि मन भय दिखाए तो शुद्धात्मा में चले जाना है।

'मैं शुद्धात्मा' को भय क्यों लगेगा?

प्रश्नकर्ता : यह जो भय है न, भय संज्ञा, वह किस प्रकार की है? वह कैसे उत्पन्न होती है? वह कैसे चार्ज और डिस्चार्ज होती है?

दादाश्री : भय तो, जितना खुद को टेम्परेरी (विनाशी) समझता है, उतना अधिक भय लगता है।

प्रश्नकर्ता : वह समझ में नहीं आया। खुद को टेम्परेरी समझना यानी क्या?

दादाश्री : 'मैं चंदूभाई ही हूँ', वह टेम्परेरी है और वैसा खुद को माने इसलिए भय लगता रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मुझे कुछ भी नहीं होता, मैं तो सनातन हूँ', तो भय किसलिए लगेगा?

प्रश्नकर्ता : फिर नहीं लगेगा।

दादाश्री : भय होता ही नहीं 'हम लोगों' को! हम 'शुद्धात्मा', इसलिए 'हमें' कोई देख नहीं सकता, नुकसान नहीं कर सकता, मार नहीं सकता, कोई नाम भी नहीं दे सकता! ये तो खुद के कल्पित डर से जगत् सर्जित हो गया है। किसी की बीच में दख़ल नहीं है। और 'चंदूभाई' ज़रा नरम हो गए हो तो 'हम' उन्हें दर्पण के सामने खड़ा रखकर ऐसे कंधा थपथपाकर कहें कि ''हम हैं न आपके साथ! पहले तो अकेले थे, उलझन में पड़ जाते थे। किसी से कह नहीं सकते थे। अब तो साथ में ही हैं। घबराते क्यों हो? हम 'भगवान' हैं और आप 'चंदूभाई' हो। इसलिए घबराना मत।'' यदि चंदूभाई बहुत 'एलिवेट' (बुलंद) हो रहे हों तो उन्हें कहना 'हमारी सत्ता के कारण आपका इतना रौब पड़ता है।' अर्थात् हमें होम डिपार्टमेन्ट में बैठे-बैठे फ़ॉरेन का सब निपटाते रहना है। यह निर्लेप 'ज्ञान' है, कुछ भी स्पर्श नहीं कर सके, ऐसा है!

मृत्यु के भय के समय शुद्धात्मा की जागृति

यह आत्मा दिया है न, तो भय लगने पर अंदर घुस जाता है। भय नहीं हो न, तब तो बाहर से ज़रा यह ले आता है, वह ले आता है। लेकिन बम गिरने लगे तो अंदर घुस जाता है। जहाँ भय न हो, ऐसी जगह ढूँढता है, वह अंदर ही घुस जाता है। अत: भय में यह (ज्ञान) बहुत अच्छा रहता है। मरते समय अच्छा रहता है या फिर मरने जैसा भय हो न, तब बहुत अच्छा रहता है।

प्रश्नकर्ता : भय आए तब आत्मा में घुस जाता है?

दादाश्री : वे तो, जो बाह्य भाव हैं न, वे सभी आत्मा में घुस जाते हैं, जागृति जो बाहर बरतती है, वह जागृति आत्मा में आ जाती है और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा हो जाता है। फिर तो बाहर का वह सब छोड़ ही देता है, सभी चिट्ठियाँ लिखना बंद कर देता है और जब तक भय नहीं आता न, तब तक तो कहता है, 'चलो, थोड़ी जलेबी ले आता हूँ, थोड़ा नाश्ता ले आता हूँ।' और भय आते ही अंदर घर में घुस जाता है और मृत्यु का भय आए तब उस समय 'घर' (आत्मा) में रहता है।

प्रश्नकर्ता : तो भय लगने पर जागृति हज़ारों गुना बढ़ जाती है?

दादाश्री : बढ़ती ज़रूर है, जागृति बढ़ती है लेकिन हमेशा ज्ञाता-द्रष्टा के तौर पर भाव तो रहता है न! परंतु जब बाहर आफत आएगी, उस समय अंदर घुस जाएगा। और अंदर घुस जाता है तब संपूर्ण आनंद ही रहता है। दु:ख रहता ही नहीं न!

इस ज्ञान के मिलने के बाद उसे कोई भी भय सता नहीं सकता। निरंतर निर्भय रह सकता है। होता है या नहीं होता? कोई निर्भय देखा है?

प्रश्नकर्ता : निर्भय आप जिस सेन्स में कह रहे हैं, उस सेन्स में (किसी को) निर्भय नहीं देखा है।

दादाश्री : निर्भय नहीं होते। वह तो, ये कृष्ण भगवान हो गए, ये महावीर भगवान हो गए। बाकी कोई नहीं होता। मनुष्य की बिसात ही क्या निर्भय होने की? अत: वीतरागता हो तभी निर्भय हो सकते हैं। राग-द्वेष नहीं होते तब निर्भयता आती है।

शुद्धात्मा का भान बरते समाधि मरण में

प्रश्नकर्ता : जिस समय इंसान मृत्यु शैया पर होता है उस समय उसे एक हज़ार बिच्छु काटे ऐसी वेदना होती है तो उस समय यह ज्ञान रहता है या नहीं रहता?

दादाश्री : यह ज्ञान हाज़िर रहता ही है। मरते समय निरंतर समाधि देगा। जो अभी भी समाधि देता है, वह ज्ञान मरते समय तो हाज़िर रहेगा ही। मृत्यु के समय पूरी ज़िंदगी का सार हाज़िर हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : नसें खिंच रही होती हैं, नाड़ियाँ टूट रही होती हैं...

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। नसें चेतना रहित हो जाएँ न, फिर भी उसे अंदर ध्यान रहता है, शुक्लध्यान छोड़ता नहीं है न! एक बार उत्पन्न हो जाने के बाद फिर छोड़ता नहीं है। अभी भी चिंता नहीं होने देता न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो जो ध्यान चिंता नहीं होने देता, ऐसा वर्ल्ड में कभी भी हुआ नहीं है, वैसी

चीज़ आज हुई है, तो क्या वह आपको मरते समय छोड़ देगा? 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान रहे तो उसे समाधि मरण कहा जाता है। फिर चाहे शरीर को कितनी भी पीड़ा हो रही हो, वह नहीं देखना है। अर्थात् जागृत रहता है, उस समय। मोह कम हो जाता है तो ममता कम हो ही जाती है। उसके बाद ममता का पता चलता है कि 'जो मेरा नहीं है उसके प्रति ममता कर रहा हूँ।' इसलिए ममता छूट ही जाती है। इसलिए फिर समाधि मरण हो ही जाएगा।

इसलिए मृत्यु से कहें, कि ''तुझे जल्दी आना हो तो जल्दी आ, देर से आना हो तो देर से आ, मगर 'समाधि मरण' आना!''

समाधि मरण अर्थात् आत्मा के सिवाय और कुछ याद ही नहीं हो। निज स्वरूप शुद्धात्मा के अलावा दूसरी जगह चित्त ही नहीं हो, मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार कुछ भी डाँवाडोल नहीं हो! निरंतर समाधि! देह को *उपाधि* (परेशानी) हो, फिर भी *उपाधि* छुए नहीं! देह तो *उपाधि* वाला है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : केवल *उपाधि* वाला ही नहीं, व्याधि वाला भी है या नहीं? ज्ञानी को *उपाधि* नहीं छूती। व्याधि हुई हो तो वह भी नहीं छूती। और अज्ञानी तो व्याधि नहीं हो तो उसे बुलाता है! समाधि मृत्यु अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान रहे! अपने कितने ही महात्माओं की मृत्यु हुई, उन सभी को 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान रहा करता था।

जब आखिर में जाने का समय हो जाए (मृत्यु समय), तब 'खुद का' सारा ही भाग सिकोड़ लेता है और उसकी समाधि में ही रहता है। हमारे सम्यक् दृष्टि वाले महात्माओं का समाधि मरण होता है। 'शुद्धात्मा' के लक्ष्य के साथ ही देह छूटती है।

डिप्रेशन का जानकार आत्मा

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा का लक्ष्य निरंतर रहता है, फिर भी बहुत बार मन 'डिप्रेस' हो जाता है, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : अपना ज्ञान तो क्या कहता है कि 'चंदूभाई' को क्या हो रहा है, वह देखते रहो। दूसरा कोई उपाय है ही नहीं न! अधिक कचरा भरकर लाया है, वैसा हमें पता चल जाता है न?

प्रश्नकर्ता : उस समय ज्ञेय-ज्ञाता का संबंध नहीं रहता और 'इस मन-वचन-काया से मैं अलग ही हूँ', ऐसा उस समय नहीं रहता।

दादाश्री : वह ज्ञेय-ज्ञाता का संबंध नहीं रहे, तो तुझे पता ही नहीं चलेगा कि चंदूभाई का यह चला गया है! यह पता किसे चलता है? इसलिए यह तो बिल्कुल जुदा रहता है तुझे! एक-एक मिनट का पता चलता है।

प्रश्नकर्ता : परंतु पता चल जाने के बाद वह बंद हो जाना चाहिए न? और वापस आत्मा की तरफ मुड़ जाना चाहिए न?

दादाश्री : वह मोड़ने से मुड़ जाए, ऐसा नहीं है। आप क्या मोड़ लो ऐसे हो?

प्रश्नकर्ता : यानि दादा, इस तरह 'मशीनरी' उल्टे रास्ते पर चलती ही रहें और हमें उसे 'देखते' ही रहना है सिर्फ?

दादाश्री : और दूसरा क्या करना है? उल्टा रास्ता और सीधा रास्ता दोनों रास्ते ही हैं, उन्हें देखते ही रहना है।

प्रश्नकर्ता : परंतु उल्टे रास्ते पूरा जन्म बेकार जाएगा न?

दादाश्री : परंतु उसमें ऐसे कलह करो तो क्या होगा? उसे 'देखते रहना', वही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ समझ में नहीं आने के कारण आप उलझ जाते हो। यह तो सिर्फ 'सफोकेशन' ही है।

प्रश्नकर्ता : अंत में फिर उकता जाते हैं कि यह सब क्या हो रहा है?

दादाश्री : उकताहट हो तो चंदूभाई को होगी। 'आपको' थोड़े ही होती है? और 'आपको' चंदूभाई को डाँटना चाहिए और उससे शाम को प्रतिक्रमण करवाना चाहिए।

जब डिप्रेशन आए उस समय 'यह मेरा स्वरूप नहीं है', 'मैं शुद्धात्मा हूँ, इस डिप्रेशन को जानने वाला हूँ', ऐसा तय हो जाए कि वह अलग है तो हो गया कल्याण। जागृति को ही संभालते रहना है, उसी को पोषण देते रहना है, वही शुद्धात्मा है।

प्रश्नकर्ता : और वास्तव में खुद जानने वाला ही है न? डिप्रेशन कब आया, कितना आया, पिछली बार से यह कम है या ज़्यादा है?

दादाश्री : सबकुछ जानता है।

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार डिप्रेशन को जानने वाले आत्मा की तरह रहना है, उसी प्रकार यदि एलिवेशन के समय भी जानने वाले की तरह रहा जाए तो डिप्रेस होने का समय नहीं आएगा न?

दादाश्री : कुछ सुनकर टाइट हो जाए तब आत्मा जान जाता है कि इसने छाती फुलाई है। एलिवेट हो गया है इसलिए डिप्रेशन आए बगैर नहीं रहेगा।

प्रश्नकर्ता : तो क्या एलिवेशन के समय अंदर ऐसी जागृति रखनी चाहिए कि हम टाइट हो गए?

दादाश्री : वैसी जागृति रहे तो कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी कि जितना एलिवेशन होगा उतना ही अधिक डिप्रेशन आएगा न?

दादाश्री : डेढ़ सौ फुट ऊँची कुर्सी पर बैठा हुआ हो तो डेढ़ सौ फुट से गिरेगा।

डिप्रेशन के तप में मिले आत्मा

आत्मा कब मिलता है? ज़बरदस्त डिप्रेशन आ जाए तब उसमें शांति बनाए रखे तब आत्मा मिलता है। उसका उपाय किया तो मारा जाएगा। डिप्रेशन में सांसारिक उपाय किया। डिप्रेशन में ही आत्मा मिलता है।

डिप्रेशन तप कहलाता है। और तप करने पर आत्मा मिलता है। लेकिन ये बच्चे बेचारे उसे खो देते हैं, समझ नहीं है न! आत्मा कब मिलता है (आत्मा का पता कब चलता है)?

प्रश्नकर्ता : दुःख में।

दादाश्री : जब चारों तरफ से उपसर्ग व परिषह हों न, तब आत्मा मिलता है। तुझे समझ आ रहा है या नहीं? हाँ, तो अब क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : अब नहीं खोऊँगा।

दादाश्री : डिप्रेशन में कोई उपाय नहीं। डिप्रेशन जैसी तो कोई भी दवाई नहीं है इस दुनिया में। उसे इन नासमझ लोगों ने मिट्टी में मिला दिया। नासमझ लोग। बहुत ही स्ट्रोंग रहना। 'सूखकर मर जा, लेकिन अब जो एकाकार हों तो वह कोई और। आप अलग और हम अलग', कहना। उस समय चमकारा होगा।

जब बहुत भूख लगे तब किसी की भी जूठन खा लेते हैं। इज़ दिस द वे? अब इसे जंगली नहीं तो और क्या कहेंगे? लोगों की जूठन खानी है या रौब रखना है? जिसने रौब रखा, उसका आत्मा हाज़िर हो जाता है। क्या करोगे अब?

प्रश्नकर्ता : अभी तक तो जब डिप्रेशन आता था, तो उसे दूर करने के उपाय करते थे।

दादाश्री : डिप्रेशन तो हितकारी है अब। सब से ज़्यादा हितकारी, डिप्रेशन है।

प्रश्नकर्ता : यह अब फिट हो गया है।

दादाश्री : फिट हो गया है लेकिन मेरा कहना है कि डिप्रेशन में से अब निकल जाना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : वह निकल रहा है।

दादाश्री : निकल रहा है, लेकिन उसमें से अब निकल ही जाना चाहिए। इसमें है ही क्यों? साफ ही कर देना है कि 'चंदूभाई, सूख-सूख कर खत्म हो जाएगा फिर भी हम तो तुझसे अलग ही है।'

डिप्रेशन में तो अवश्य इस प्रकार से रह सकते हैं। डिप्रेशन नहीं हो तो बात अलग है। डिप्रेशन यानी क्या कि आत्मा प्रकट होने की हद आ चुकी है। क्या तुझे मालूम नहीं है यह?

प्रश्नकर्ता : जब वह सहन नहीं होता तब फिर भौतिक में से सुख ढूँढने का प्रयत्न करता है।

दादाश्री : सहनशीलता की उस हद पर आत्मा प्रकट होता है। यों ही क्या आत्मा प्रकट हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, यह जो बात की है, वह एक्ज़ेक्ट है लेकिन अभी खुद अकेला युद्ध लड़ सके, ऐसा नहीं है।

दादाश्री : नहीं। लड़ सकता है, सब लड़ सकता है। ये उसने (खुद को) धमकाया और वह जो रोया है, ऐसा रोया है, फिर पूरी तरह से बंद हो गया सब। उल्टा बहीखाता बंद ही हो गया।

डिप्रेशन तो सब से अच्छा समय कहलाता है। उसका लाभ उठाना चाहिए। यों ही डिप्रेशन नहीं आता और आत्मा प्रकट होता नहीं। डिप्रेशन में ही आत्मा प्रकट होता है। डिप्रेशन का सौ प्रतिशत लाभ ले लेना, डिप्रेशन को जाने मत देना। अब लाभ लेगा न? कितने प्रतिशत?

प्रश्नकर्ता : सौ प्रतिशत लाभ लेना है।

दादाश्री : हाँ! ये लोग, मेरे साथ रहने वाले जब नहीं समझते तब मुझे चिढ़ मचती है कि, 'ये कैसे हैं?!' ब्रह्मचर्य पालन करने वाले क्या ऐसे होते हैं? देह से कहना, 'जल, एक तरफ तू जल और मैं देखूँगा। तू भभककर जलेगा, तब मैं देखूँगा।' इतने स्ट्रोंग होने चाहिए। यह तो, इतना छोटा सा परिषह भी सहन नहीं होता तब फिर बाईस परिषह क्या सहन करेंगे ये प्यादे?

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी पुरुष बल देंगे न?

दादाश्री : ज्ञानी पुरुष तो बहुत बल देते हैं लेकिन फिर भी खुद की समझ से ही चलता है। पागलपन करता है। डिप्रेशन का इलाज करवाता है। ओहोहो इलाज करवाया! डिप्रेशन तो आत्मा प्रकट होने के लिए सब से बड़ा प्रवेश द्वार है। बल्कि यदि अंदर डिप्रेशन नहीं आ रहा हो तो किसी से कहना, मुझे डाँटो।

'मुझे डाँटो', ऐसा क्यों कहना चाहिए?

इसलिए ताकि डिप्रेशन आए। डिप्रेशन आएगा तो मुझे आत्मा का पता चलेगा। तब निदिध्यासन प्रकट होगा! वर्ना प्रकट ही नहीं होगा न यह सब तो। डिप्रेशन में से आत्मा मिला है इसलिए जब वह डिप्रशन आए तब 'और भी आओ', कहना। उपाय नहीं करना है। डिप्रेशन का उपाय किया यानी कि जब उसमें आत्मा प्रकट होने ही वाला था, उस समय दरवाज़े बंद कर दिए।

डिप्रेशन की हद.. भगवान होने का प्रवेश द्वार

वे हद नहीं जानते कि हमें कहाँ पर स्थिरता रखनी है। मैंने तो समझा कि स्थिरता रखते होंगे। जबकि ये कहते हैं, 'डिप्रेशन आता है तब हम जूठन खा लेते हैं। रास्ते से गुज़र रहे हों तो किसी ने जो कुछ भी फेंका हो, थोड़ा-बहुत वह भी खा लेते हैं।' सुनकर मैं तो स्तब्ध रह गया। मेरा सिर घूम गया। लोगों की जूठन भी खा जाते हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं खानी चाहिए।

दादाश्री : यह कह रहा है न, 'हम तो खा लेते हैं।' कितनी जूठन खाते हैं। डिप्रेशन आए तब 'खा लेता हूँ', ऐसा कह रहा था न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो फिर? क्या अभी भी ऐसा करेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं करना है।

दादाश्री : डिप्रेशन में तो, अधिक रहना चाहिए। 'डिप्रेशन, अभी तो तू और आ', कहना। 'मैं हूँ और तू है।' उस घड़ी आत्मा अलग हो जाएगा एकदम से। अगर पट्टी उखाड़ते समय 'अरे बाप रे, अरे बाप रे', करने से क्या वह उखड़ेगी? क्या करना पड़ेगा? 'उखाड़ दे भाई', कहना। भले ही बालों के साथ चली जाए लेकिन फिर उखड़ेगी। इस तरह तो पट्टी नहीं उखड़ती और रोज़ जलन होती है। यह भी कोई तरीका है?

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन वह तो अहंकार हुआ न?

दादाश्री : वह तो डिस्चार्ज अहंकार है। उसमें चार्ज अहंकार तो है ही नहीं न! तू अपनी बुद्धि से मत चलना। बेकार ही मार खा जाएगा। प्रोटेक्शन मत करना। डिप्रेशन तो भगवान बनने का एक सब से बड़ा प्रवेश द्वार है। अंदर घमासान चलने लगे, अंदर बिल्कुल चैन नहीं पड़े। अंदर ऐसे-ऐसे होने लगे, उस समय, 'चलो, सब दूर बैठो', कहना। तब सभी दूर बैठ जाएँगे एकदम से। 'जाता है या नही', ऐसा कहते ही सभी हट जाएँगे एकदम से। डिप्रेशन में क्यों आएँ, भला! ऐसे गर्जना करो... *'रे सिंहना संतानने शियाल ते शुं करी शके?'* (अरे, सिंह की संतान को सियार क्या कर सकता है?)

जब डिप्रेशन आए न, तब कहना, 'और भी आओ।' वह नहीं ले जा सकता आपको। आत्मा तो वहीं का वहीं है न! 'और भी आओ' सब मिलकर, और जब आएँ न, तब ये दादा मिले हैं न, तो दादाई बैंक में बेहिसाब माल है! मैं आपका पेमेन्ट कर दूँगा। दादा के बैंक में कमी नहीं है!

ज्ञानी पुरुष मिले हैं, अक्रम विज्ञानी हैं। खाने-पीने की छूट, सारी छूट है लेकिन यह ऐसा? यह भला, ज़रा सा डिप्रेशन आ जाए तो उस डिप्रेशन से घबरा जाते हो? बम गिरने वाला हो तब भी अंदर ज़रा सा भी विचलित नहीं होना चाहिए जबकि इस डिप्रेशन से घबरा जाता है? अरेरे! बम गिरने वाला हो, और कोई

कहे कि बम गिरने वाला है, तब कहना 'भाई! जब गिरना हो तब गिरना, मैं हूँ और तू है, तू गिरने वाला है और मैं जानने वाला हूँ।' जिस पर गिरेगा, वह जलेगा, जानने वाला कभी भी नहीं जल सकता। चाहे कितनी भी बड़ी होली जलाई जाए लेकिन उस होली देखने वाले की आँखें कहीं जल नहीं जातीं। अत: आत्मा पर तो कोई असर नहीं होता। आत्मा तो बम के भी आरपार निकल जाए लेकिन उस पर तो कोई असर नहीं होगा! ऐसा आत्मा दिया है मैंने आपको!

जगत् जीता जा सकता है, हारकर

इस 'ज्ञान' के बाद आपको निरंतर शुद्धात्मा का ध्यान रहता है। इसलिए रोज़ शाम को हमें पूछना चाहिए कि, 'चंदूभाई हो या शुद्धात्मा?' तो कहेगा कि, 'शुद्धात्मा!' तो पूरा दिन शुद्धात्मा का ध्यान रहा कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हम ऐसा कहेंगे तो लोग हमें 'पागल' कहेंगे।

दादाश्री : पागल कहेंगे तो 'चंदूभाई' को पागल कहेंगे। आपको तो कोई कहेगा ही नहीं। आपको तो पहचानते ही नहीं है न! 'चंदूभाई' को कहेंगे तो 'आप' कहना कि, 'चंदूभाई, आप (पागल) होंगे तभी कह रहे होंगे और अगर आप नहीं हो फिर भी अगर कहेंगे तो उनकी जोखिमदारी। वह फिर आपकी जोखिमदारी नहीं है।' 'आपको' ऐसा कहना है।

प्रश्नकर्ता : हमें कोई कुछ कहे, पागल कहे, बेअक्ल कहे, तो अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : ऐसा है न, आपको हँसना हो तो आटा नहीं फाँकना चाहिए और आटा फाँकना हो तो हँस नहीं सकते। दोनों में से एक रखो। आपको मोक्ष में जाना है, तो लोग पागल भी कहेंगे और मारेंगे भी सही, सभी कुछ करेंगे। लेकिन आपको अपनी बात छोड़ देनी पड़ेगी। तब आप कह देना, 'भाई, मैं तो हारकर बैठा हूँ।' हमारे पास एक सज्जन आए थे। मैंने उनसे कहा कि, ''आपको हारकर जाना पड़ेगा, इसके बजाय मैं हारकर बैठा हूँ। तू आराम से खाकर-ओढ़कर सो जा न! तुझे जिसकी ज़रूरत थी, वह तुझे मिल गया। 'दादा' को हराने की इच्छा है न? तो मैं खुद ही कबूल करता हूँ कि मैं हार गया।''

अर्थात् इनकी बराबरी कैसे कर पाएँगे? यह सारी तो माथापच्ची कहलाती है। इस देह को मार पड़े तो अच्छा, लेकिन उसमें तो दिमाग़ को मार पड़ती है। वह तो बहुत परेशानी है।

निरीच्छक को डिप्रेशन कैसा?

शुद्धात्मा अलग होने के बाद परिषह और उपसर्ग का असर किस पर होता है? चंदूभाई पर होता है। और फिर यदि चंदूभाई घबराए, तब आप कहना, 'मैं हूँ आपके साथ, घबराना मत।'

प्रश्नकर्ता : हिम्मते मर्दां तो मददे दादा। आज अच्छा वाक्य निकला।

दादाश्री : हाँ! डिप्रेशन तो लोगों को आता है। आपको भला डिप्रेशन क्यों आएगा? आपको कहीं डिप्रेशन होना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : दादा, डिप्रेशन आने का रूट कॉज़ क्या है?

दादाश्री : खुद की कमज़ोरी, और क्या?

प्रश्नकर्ता : किस प्रकार की कमज़ोरी?

दादाश्री : हर प्रकार की। खुद की चोर नीयत है तो डिप्रेशन ही आएगा।

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्ट शब्द है, दादा।

दादाश्री : जिसकी नीयत चोर नहीं है और निखालसता है, उसे डिप्रेशन कैसा? भोगने की इच्छा है इसीलिए न! जिसे इच्छा नहीं है उसे डिप्रेशन क्यों आएगा, निरीच्छक को? आप सब आत्मा हो गए हो तो अब इच्छा नहीं है, निरीच्छक हो!

देखते रहो अंदर के कचरे को

दादा ने आपको समझाया कि आप शुद्धात्मा हो। तो आपकी श्रद्धा बदली। अतः शुद्ध हो गए, वह बात पक्की है। लेकिन अब अंदर का सब साफ करना बाकी है ?

अतः अब तू अंदर का यह सारा कचरा निकाल दे। कचरा अभी दिखाई देता है या नहीं दिखाई देता? तब कहते हैं, 'हाँ, कचरा पड़ा है।' तो कचरा निकाल देने के बाद, अब और क्या है? वह कहता है कि 'मैं शुद्ध हूँ।' रोज़ (दादा के पैर का) अँगूठा छूकर बोलता है कि, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', लेकिन अभी हो नहीं गए हो। तब अगर कोई पूछे, 'क्या बाकी है अभी उनका?' तब कहते हैं, 'इस फर्नीचर के नीचे जाले चिपके हुए हैं।' वे सभी साफ कर दिए। उसके बाद, 'अब मैं शुद्ध हूँ।' तब कहते हैं, 'नहीं, अभी ये बर्तन हैं न! उन्हें यदि साफ-सुथरा कर दोगे तभी साफ कहा जाएगा, शुद्ध कहा जाएगा।' तो, वे भी कर दिए। उसके बाद हमें कहना है, 'बर्तनों में अभी मिट्टी चिपकी हुई है।' यह सब हो जाने के बाद आप शुद्धात्मा बन जाओगे। यानी कि मैं आत्मा और यह शुद्ध *पुद्गल* हो जाएँगे। अतः यदि आप शुद्ध हो जाओगे और हम भी शुद्ध, तो हम छूट जाएँगे। अब इस बारे में मुझे आपसे कुछ कहने को नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। यानी कि अंदर का ध्यान हमें ही रखना है।

दादाश्री : आपको देखते रहना है कि वास्तव में यह कितना शुद्ध हुआ और कितना बाकी है!

प्रश्नकर्ता : अब सूक्ष्मता से सारा कचरा निकाल देना है।

दादाश्री : सूक्ष्मता से कचरा नहीं निकाल रहे थे, अब तक?

प्रश्नकर्ता : नहीं! नहीं निकाला होगा।

दादाश्री : 'नहीं निकाला होगा' कह रहा है। निकाला ही नहीं है। मेरे पास एक भी शब्द बिना तौले नहीं रहेगा। यह तराजू अलग तरह का है! वह कचरा आपको निकालना है या मुझे निकालना है?

प्रश्नकर्ता : आपकी कृपा से हम निकाल देंगे।

दादाश्री : लेकिन ऐसा सभी कुछ देखते ही रहना। सूक्ष्मता से सब देखने के बाद मुझे बताना कि, मैं शुद्ध हो गया अब। यदि बाहरी रंग-रोगन से इतना सुख मिला तो जैसे-जैसे अंदर का शुद्ध करोगे, वैसे-वैसे क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : और ज़्यादा सुख होगा।

दादाश्री : पूर्णतः सुख, परमानंद स्थिति! समाधि में रह सकोगे।

इसलिए अब यह सब देखना बारीकी से। अगर मुझे बैठा दे तो पूरी रामायण बन जाए, ऐसा है। पूरी किताब बन जाए। यह संक्षेप में, पाँच मिनट में आपको समझा दिया।

प्रश्नकर्ता : अभी भी ऐसी सूक्ष्म दृष्टि मिल सकती है या नहीं?

दादाश्री : अभी ऐसा कहा है तो सूक्ष्म दृष्टि हो ही जाएगी। लेकिन आपने कभी ऐसा नहीं कहा कि, भाई, हमें अब कुछ नहीं करना है? हमारा तो सब हो गया, कहते हैं।

ये तो कह रहे थे कि, मैं शुद्ध हो गया हूँ और अब कहते हैं, नहीं, शुद्ध नहीं हुआ हूँ। अब शुद्ध करना है। पहले कैसे हो गए थे? बाहर से दिखने में शुद्ध लेकिन अंदर से कचरे वाले।

यहाँ तो खुद को भगवान बनना है। यहाँ भगवान के दास नहीं बनना है। अभी तो दासानुदास लिखते हैं लेकिन अंत में शुद्ध करते-करते भगवान बन जाओ। आपके अंदर वैसी अनंत शक्ति हैं।

कब तक दिखाते रहेंगे दादा?

प्रश्नकर्ता : अब, वह कचरा यानी कौन सा कचरा?

दादाश्री : सारा कचरा ही पड़ा है। जो हमें मूल वस्तु पर, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा उपयोग नहीं रखने देता, वह सारा कचरा ही है। वह कचरा साफ करने के बाद उपयोग रहेगा। मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह थोड़ा-बहुत समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : जो शुद्ध उपयोग में नहीं रहने देतीं, वे सभी चीज़ें कचरा हैं।

दादाश्री : हाँ! यानी मैं कब तक दिखाता रहूँ? अब आपको देखना है। जो बर्तन बदबू मार रहे हैं, वे फफूंद की बदबू वाले हैं। बदबूदार बर्तनों में कोई खाता है क्या? उन्हें उतना साफ कर लेना है। एक बार पूरी तरह से शुद्ध कर दो।

प्रश्नकर्ता : दादा। हमने लिख लिया है कि घर में से सूक्ष्मता से सारा कचरा निकाल देना है।

दादाश्री : इस सूक्ष्म बात में आपका दिमाग़ नहीं चलेगा। यह बात समझ रहे हो न? जानते हो न, ऐसी सूक्ष्म बातों को? वह तो ज्ञानी का काम है न! अतः यह लिख लेने जैसा है। फिर वही आपका सब काम कर लेंगी। इस तरह बताया था ताकि भूल न जाओ। अगर लिख लोगे और रोज़ पढ़ोगे तो जागृति रहेगी कि, 'अब क्या-क्या बाकी रहा?' आपको जांच करनी है। जांच करने से पता चलेगा। अंदर से भगवान ने कहा है कि, 'बता दो सब को। फिर कब तक ज़िम्मेदारी रखोगे?'

मैं (हमेशा) दिखाने नहीं आऊँगा। आपको ही दिखाना है। मुझे अब फिर से नहीं कहना पड़ेगा न? अब मुझे कहने न आना पड़े। आपको ही कहना है, 'चंदूभाई ऐसा करो, ऐसा करो।' यह कचरा आपको रेग्युलर नहीं रहने देता। इसलिए घर में कचरा है तो 'आपको' 'इनसे' कह देना है कि 'चंदूभाई, देखो अभी भी कचरा है।' तब चंदूभाई कहेंगे, 'आपके शुद्ध होने से मुझे क्या फायदा?' तो कहना, 'इतना निश्चित है कि अगर हम शुद्ध हो गए तो आपका भी सब ठीक हो जाएगा। इसकी गारन्टी है।'

प्रश्नकर्ता : शुद्ध तो हमें चंदूभाई को ही करना है न!

दादाश्री : हं। 'आप' तो शुद्ध हो ही। आप शुद्धात्मा ही हो। अब चंदूभाई क्या कहते हैं कि 'मैं भी शुद्ध हो गया हूँ।' तब कहना, 'नहीं, अभी बाहर से सब धुल गया है लेकिन अभी तो अंदर बहुत कचरा पड़ा हुआ है, उसे साफ कर दो तो शुद्ध हो जाओगे!' बर्तन धो दिए। जैसे-तैसे वे तो धो दिए इसलिए फिर उन पर कहीं-कहीं मिट्टी दिखाई देती है। तब कहना, 'यह मिट्टी दिखाई देती है, साफ करो।' तब कहेगा, 'ये तो गीले हैं।' उस वक्त कहना 'तो कपड़े से पोछ दो।' हमने आपको छूट दे रखी है कि खाना भाई। हाँ,

इसमें से यदि हांडवा खाना चाहो तो हांडवा खाना और जलेबी भी खाना।'

यह समझ में आया कि मैं क्या कहना चाहता हूँ? अब कचरा साफ करना है। एक काम खत्म होते ही उन्हें दूसरा दिखाना है और आप जितना अलग रहकर 'देखोगे' कि इसने गर्वरस चखा, उतना ही *पुद्गल* अलग होता जाएगा। वर्ना अलग नहीं हो पाएगा। 'देखने' से आप अलग और *पुद्गल* अलग हो जाएगा।

जिसने बिगाड़ा, वही करे साफ

ज्ञानी पुरुष ने आपकी यह श्रद्धा तोड़ दी कि 'मैं चंदूभाई हूँ।' वह सब तोड़ दिया, पूरा ही! 'मैं चंदूभाई हूँ, मैं इसका भाई हूँ, इसका चाचा हूँ, इसका मामा हूँ, इसका पति हूँ', कितना कुछ तोड़ दिया चारों ओर से! अब यहाँ तक पहुँचे हो कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और अब साफ करते-करते अंदर तक जाना है। तब बिगाड़ किसने किया था? तब कहता है, पहले हमने ही किया था बिगाड़। और बहुत साल पड़े रहने पर उन बर्तनों पर ज़ंग ही लग जाएगा न? अब भीतर साफ करना है। खाना, पीना, सोना, सत्संग में बैठना लेकिन अपना चित्त निरंतर शुद्धि करने में रहना चाहिए। शुद्धि करने लगे, उसी को कहते हैं उपयोग। क्या सभी रूमों को साफ करना शुरू कर दिया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, साफ करने लगे हैं। जाले-वाले बहुत हैं। अब ऐसा दिखाई देता है कि जाले कहाँ है। अंदर कहीं कोनों में, झिर्रियों में भरे पड़े हैं। अब दिखाई देते हैं।

दादाश्री : उन्हें देखने वाले आप हो और साफ करने वाले 'वे' हैं, घर के मालिक। साफ करने के बाद जब वापस वे कहें कि, 'अब मैं आराम करूँ?' तब कहना, 'नहीं, अभी तो यह बाकी है। सब खत्म हो जाने के बाद आराम करना।'

प्रश्नकर्ता : हाँ, राइट।

मालिकीपन छोड़ने पर एक्ज़ेक्ट ज्ञान हाज़िर

दादाश्री : अब, 'मैं चंदूभाई हूँ' उस ज्ञान पर तो आपको शंका हो गई न या नहीं हुई?

प्रश्नकर्ता : शंका हो गई है। यानी कि मैं आत्मारूप हूँ और चंदूभाई परसत्ता है, पड़ोसी है।

दादाश्री : हाँ, चंदूभाई पड़ोसी है। अब एक 'प्लॉट' हो, वह जब तक उन दो भाइयों के नाम हो तब तक पूरे 'प्लॉट' में जो कुछ होता है, वह दोनों का नुकसान कहलाता है लेकिन फिर अगर दोनों में बँटवारा कर दिया हो कि इस तरफ का चंदूभाई का और उस तरफ का दूसरे भाई का, तो बँटवारा हो जाने के बाद उस दूसरे भाग के लिए आप ज़िम्मेदार नहीं हो। इसी प्रकार से आत्मा और अनात्मा का बँटवारा हुआ है। उसमें बीच में 'लाइन ऑफ डिमार्केशन' मैंने डाली हुई है, 'एक्ज़ेक्ट' डाली हुई है। ऐसा विज्ञान इस काल में उत्पन्न हुआ है, उसका लाभ हम सब को उठा लेना है।

आत्मा और अनात्मा, दोनों के बीच में 'लाइन ऑफ डिमार्केशन' डाल दी इसलिए अब 'चंदूभाई' के साथ 'आपका' संबंध पड़ोसी जैसा रहा। अब पड़ोसी जो गुनाह करे, उसके गुनहगार आप नहीं हो। मालिकीपना नहीं है इसलिए गुनहगार भी नहीं है। मालिकीपना हो तभी तक गुनाह माना जाता है। मालिकीपना गया कि गुनाह नहीं रहता।

हम पूछें कि, 'आप नीचे देखकर क्यों चल रहे हो?' तब वे कहेंगे, 'नीचे नहीं देखेंगे तो पैर के नीचे जीव-जंतु कुचल जाएँगे न!' 'तो

क्या, ये पैर आपके हैं?' ऐसा पूछें, तो कहेंगे, 'हाँ, भाई, पैर तो मेरा ही है न!' ऐसा कहते हैं या नहीं कहते? यानी 'ये पैर आपका, तो पैर के नीचे कोई जीव कुचला गया तो उसके जोखिमदार आप!' और इस 'ज्ञान' के बाद आपको तो 'यह देह मेरी नहीं है', ऐसा ज्ञान हाज़िर रहता है। यानी कि आपने मालिकीपना छोड़ दिया है। यहाँ पर यह 'ज्ञान' देते समय मैं सारा मालिकीपना ले लेता हूँ। अत: उसके बाद यदि आप मालिकीपना वापस ले लोगे तो उसकी जोखिमदारी आएगी। अत: यदि आप मालिकीपना वापस नहीं लोगे न, तो 'एक्ज़ेक्ट' रहेगा। निरंतर भगवान महावीर जैसी दशा में रखे, ऐसा यह विज्ञान है!

अत: यह बाहर का, शरीर का यह भाग जो कुछ करे उसमें आपको दखलंदाज़ी नहीं करनी है तो आप नाम मात्र के भी जोखिमदार नहीं है। और आप कुछ कर भी नहीं सकते हैं। 'खुद' कुछ कर सकता है, ऐसा 'खुद' मानता है, वही नासमझी है। उससे अगला जन्म बिगाड़ता है।

अगर धूल उड़ रही हो न, तो सामने का नहीं दिखाई देता। इसी प्रकार कर्म के जंजाल के कारण सामने का दिखाई नहीं देता और उलझन में डाल देता है। लेकिन यदि ऐसी जागृति रहे कि 'मैं तो शुद्धात्मा हूँ' तो वह जंजाल खत्म हो जाएगी। यानी भगवान महावीर जैसी दशा रहे, ऐसे ये पाँच वाक्य (पाँच आज्ञा) दिए हैं आपको!

तेरा नहीं है, उसका रक्षण क्यों करना है?

यदि आप आत्मा बनकर रहते हो, तो सभी कर्मों की *निर्जरा* (आत्म प्रदेश में से कर्मों का अलग होना) है और आत्मा बनकर नहीं रहते, यदि ज़रा सा भी हटे तो उस कर्म का कुछ दाग़ पड़ेगा। क्योंकि वह जो है, वह मान्यता नहीं है आपकी। भूल होती है वहाँ पर।

प्रश्नकर्ता : स्वपद में से पर-पद में चला जाता है?

दादाश्री : नहीं, चला नहीं जाता। पर-पद में नहीं जाता, लेकिन उसके मन में ऐसा लगता है कि 'यह कौन है फिर? मेरी ही भूल है न, यह?' लेकिन वह 'मेरी भूल', कब तक थी? जब तक 'हम' 'चंदूभाई' थे, तब तक भूल थी। अब तो 'हम' 'शुद्धात्मा' हुए। शुद्धात्मा तो ऐसी भूल वाला है ही नहीं। अत: यदि बहुत ज़्यादा ऐसा हो तब आपको कहना है कि 'चंदूभाई? ओ हो हो, बहुत भूलें की हैं। भारी की हैं।' उससे क्या होता है? जब ऐसा बोलते हैं न, तो वही जुदापन दर्शाता है और 'आपकी' ज़िम्मेदारी का एन्ड हो जाता है वहाँ पर!

अपना ज्ञान तो कैसा है कि कोई कहे कि 'आपने मेरी घड़ी चोरी कर ली', तब कहना कि, 'भाई यदि आपको लगता है कि घड़ी चोरी की है तो ठीक है।' आपको आत्म स्वरूप होकर जवाब देना है। फिर यदि उस क्षण आप चंदूभाई बन जाओगे तो दिया हुआ आत्मा वापस चला जाएगा। अपने अक्रम विज्ञान में यह परेशानी है।

प्रश्नकर्ता : परेशानी होने के बावजूद भी उस समय जागृति विकसित होती जाती है। यह मार्ग जागृति बढ़ाने का है।

दादाश्री : हाँ, जागृति एकदम बढ़ जाती है। जागृति तो बहुत बढ़ जाती है। जागृति बहुत बढ़ती है। लेकिन वास्तव में यदि अभी ज़रा कुछ दखल हो जाती है तो तुरंत स्वीकार कर लेता है, 'मैंने कहाँ चोरी की है?' 'अरे, रक्षण

क्यों करते हो? जो तेरा नहीं है, उसका रक्षण क्यों करता है? जो तेरी बात ही नहीं है, उसका रक्षण करने की तुझे ज़रूरत ही नहीं है।' स्वीकार करने के बाद तो भूल अपनी कही जाएगी न? फिर उसे पता चल जाता है कि मुझसे भूल हो गई। बाद में पता चलता है लेकिन उतनी जागृति तो है।

यह ज्ञान ही ऐसा है कि मोक्ष में ले जाएगा। लेकिन आपकी जागृति से बहुत हेल्प करनी चाहिए इसे, पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुष हो जाने के बाद ही पुरुषार्थ होता है। प्रकृति और पुरुष दोनों अलग हो गए। जब तक आप 'चंदूभाई' थे, तब तक प्रकृति थी। जैसे प्रकृति नचाए वैसे आप नाचते थे। आप पुरुष बन गए और प्रकृति अलग हो गई। पुरुष हो जाने के बाद पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। पुरुषार्थ में वह जागृति तो है ही। पुरुषार्थ में और क्या है? सिर्फ हमें निश्चित करना चाहिए। स्थिरतापूर्वक सारी बातचीत करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह हुआ कि यह गलत है या सही, उसका आग्रह नहीं रखना है।

दादाश्री : गलत और सही तो जैसे कि हैं ही नहीं। वह आग्रह तो रखना ही नहीं है। लेकिन आपने कभी ऐसा चखा नहीं है। और यदि आपसे कहे कि, 'आपने चोरी की' अब ऐसा कभी सुना नहीं, कभी प्रैक्टिस नहीं हुई न और अगर एकदम से सुनना पड़े तो वहाँ पर क्या होगा? तब इमोशनल हो जाएगा। अतः आप चंदूभाई से कहकर रखो कि, 'भाई, चोर ही हो। कोई चोर कहे तो घबराना मत।' ऐसा पहले से ही कहकर रखना पड़ेगा। हाँ, 'कोई ऐसा कहे तब घबराना मत। कोई धौल लगाए तब भी घबराना मत', आप ऐसा कहकर रखना। वर्ना यदि कोई धौल नहीं मारे और बस ऐसे-ऐसे करे न, तब भी असर हो जाएगा। अतः ऐसी प्रैक्टिस कर लेनी होगी। ऐसी रिहर्सल करवाकर रखना। करवानी नहीं पड़ेगी? करवाकर रखना अच्छा है। कभी अगर परेशानी आ जाए तो उस क्षण रिहर्सल किया हुआ फल देगा। वर्ना यह ज्ञान तो सभी, काफी लोगों को, कितने ही लोगों को समाधि देता है निरंतर!

ज्ञानी के माध्यम से, स्वसत्ता प्रकट होती है

मैंने आपमें आपकी परमात्मशक्ति 'ओपन' (प्रकट) कर दी है, वही संपूर्ण सत्ता है। जिस सत्ता पर से कोई उठा दे, उसे सत्ता कहेंगे ही कैसे? स्वसत्ता के सामने तो परमात्मा भी कुछ नहीं कह सकते। अभी आपके पास जो धन है, वह परमात्मा के पास भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह?

दादाश्री : परमात्मा के पास रिकॉर्ड नहीं है। बोलने-चलने की अन्य मिकेनिकल शक्ति नहीं है। अतः वह दूसरों का कुछ भी कल्याण नहीं कर सकते! जब कि आप स्वसत्ता सहित लोगों का कल्याण कर सकते हो! इसलिए बात को समझो। करना कुछ भी नहीं है। जहाँ-जहाँ पर करना है, वह मरता है और जहाँ समझना है, वहाँ पर मुक्त है। अपना कोई घोर अपमान करे तो उसकी वह सत्ता अपने पर चढ़ बैठनी नहीं चाहिए। अपमान तो क्या लेकिन नाक काट ले, तो भी किसी दूसरे की सत्ता को मान्य नहीं करें! (खुद पर) उसका असर नहीं होने दें।

अब आत्मा प्राप्त होने के बाद में क्या? जितना-जितना शुद्ध उपयोग रहेगा, उतनी स्वसत्ता उत्पन्न होगी। और संपूर्ण स्वसत्ता उत्पन्न हो गई तो वह भगवान हो गया! *पुद्गल* परसत्ता में है, और आत्मा भी, जब तक स्वरूप का ज्ञान नहीं

हो जाता, तब तक परसत्ता में ही है। ज्ञानी मिलें और आत्मा स्वसत्ता में आ जाए, उसके बाद फिर *पुद्गल* का ज़ोर नरम पड़ता है अथवा वह मृतप्राय हो जाता है। जैसे-जैसे पुरुषार्थ बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे *पुद्गल* नरम पड़ता जाता है। एक घंटे शुद्धात्मा पद में बैठकर प्रतिक्रमण करो तो स्वसत्ता का अनुभव होगा।

आत्मज्ञान से दूज के चंद्रमा जैसी शुरुआत

यह विज्ञान है इसलिए हमें इसका अनुभव होता है और भीतर से ही सचेत करता है। वहाँ तो हमें करना पड़ता है जबकि यहाँ भीतर से ही सचेत करता है।

प्रश्नकर्ता : अब यह अनुभव हुआ है कि भीतर से चेतावनी मिलती है।

दादाश्री : अब हमें यह मार्ग मिल गया है और शुद्धात्मा की जो बाउन्ड्री (सीमा-रेखा) है, उसके पहले दरवाज़े में प्रवेश मिल गया है। जहाँ से कोई भी वापस नहीं निकाल सकता। किसी को भी वापस निकालने का अधिकार नहीं है, ऐसी जगह पर आपने प्रवेश पाया है।

बार-बार कौन सचेत करता है? प्रज्ञा! 'ज्ञान' प्राप्ति के बिना प्रज्ञा की शुरुआत नहीं हो सकती है। अगर समकित प्राप्त हो जाए, तब प्रज्ञा की शुरुआत होती है। समकित में प्रज्ञा की शुरुआत किस प्रकार होती है? दूज के चंद्रमा जैसी शुरुआत होती है। जबकि अपने यहाँ तो पूर्ण प्रज्ञा उत्पन्न हो जाती है। फुल (पूर्ण) प्रज्ञा यानी वह फिर मोक्ष में ले जाने के लिए ही सचेत करती है। भरत राजा को तो सचेत करने वाले रखने पड़े थे, नौकर रखने पड़े थे। वे हर पंद्रह मिनट में कहते थे कि 'भरत राजा! चेत, चेत, चेत!' तीन बार आवाज़ लगाते थे। देखो, आपको तो अंदर से ही प्रज्ञा सचेत करती है। प्रज्ञा निरंतर सचेत करती रहती है, कि 'ऐ, ऐसे नहीं।' पूरे दिन सचेत करती रहती है। और यही है आत्मा का अनुभव! निरंतर, पूरे दिन आत्मा का अनुभव!

पूरे जगत् का सार वह है शुद्धात्मा

स्वरूप के भान के अलावा जो भी जानते हो, वह अज्ञान है और स्वरूप के भान के बाद जो भी जानते हो, उसे जाना हुआ कहते हैं। आत्मयोग हुआ, वही स्वरूप का भान हुआ। आत्मा अवाच्य हैं, अनुभवगम्य हैं। वह दिव्यचक्षु से ही दिखता है। पूरे जगत् का तत्त्व, पूरे जगत् का सार, वह है 'शुद्धात्मा।' 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा आपको अपने आप याद आता है न, ज्ञान के बाद?

प्रश्नकर्ता : हाँ, आता है।

दादाश्री : अब, वह आपको निरंतर याद आता रहेगा, निरंतर *लक्ष* (रहेगा और) वही है अनुभूति। अब, अनुभूति धीरे-धीरे बढ़ती जाएगी। अभी अमावस में से दूज के रूप में उसकी शुरुआत हुई है। फिर तीज होगी, चौथ होगी, पंचमी होगी, जैसे-जैसे अनुभूति बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा प्राप्त हुआ है, उसकी तो दादा गारन्टी देते हैं।

दादाश्री : हाँ, उसकी गारन्टी देते हैं। हमने आपको दिया है शुद्धात्मा। आप में जो प्रकट हुआ है, वह वास्तविक शुद्धात्मा है। अब संभालना तेरे हाथ में है।

प्रश्नकर्ता : फिर से आपने यह बदला! 'लिफ्ट में बिठा दिया है इसलिए मोक्ष में जाओगे ही', ऐसा भी आप कहते हैं।

दादाश्री : वह तो, यदि ऐसा नहीं कहेंगे तो फिर गाड़ी ही नहीं चलेगी। लेकिन यह बिल्कुल नई बात है न, यदि ऐसा नहीं कहेंगे तो समझ में ही नहीं आएगा। बाकी की सारी ज़िम्मेदारी हमारे सिर पर। खाना-पीना, मज़े करना। तू हमारी पाँच आज्ञा का पालन करना, बस!

शुद्ध सामायिक की कीमत

पाँच वाक्यों (आज्ञा) में जितना रह पाओ उतना अवश्य ही रहना चाहिए और यदि न रहा जा सके तो भीतर थोड़ा-बहुत खेद रखना चाहिए कि 'ऐसे तो कैसे कर्म के उदय लेकर आए हैं जो हमें आज शांति से नहीं बैठने देते!' दादा की आज्ञा में रहने के लिए, कर्म के उदय का भी साथ चाहिए न? नहीं चाहिए? नहीं तो चलते-चलते एक घंटे तक शुद्धात्मा देखते-देखते जाना। इस तरह एक घंटा निकालना। लो चलते-फिरते पुनिया श्रावक की सामायिक हो गई!

'अपनी' यह सामायिक करते हो, तब भी प्रकृति एकदम सहज कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : भगवान महावीर ने भी जिनकी सामायिक की प्रशंसा की है, उसमें क्या रहस्य है, वह ज़रा समझाइए।

दादाश्री : वह शुद्ध सामायिक थी। मनुष्य में ऐसी सामायिक करने का सामर्थ्य ही नहीं है न! शुद्ध सामायिक! यह जैसा मैंने आपको दिया है, वैसा वह दिव्यचक्षु सहित सामायिक थी।

वे पुनिया श्रावक घर में रहें या बाहर घूमे, फिर भी उन्हें शुद्ध सामायिक होती थी। उनकी वह सामायिक दिव्यचक्षु के आधार पर थी। वे रूई लाते थे और फिर उसकी पुनियाँ बनाकर बेचते थे, इसलिए वे पुनिया श्रावक कहलाते थे। पुनियाँ कातते समय उनका मन, तार में रहता था और चित्त भगवान में रहता था। इसके अलावा वे बाहर कुछ भी देखते-करते नहीं थे। दखल करते ही नहीं थे। मन को व्यवहार में रखते थे और चित्त को निश्चय में रखते थे। वह सर्वोच्च सामायिक कहलाती है।

'अलग' रखने की सामायिक

आज 'अलग' रखने की सामायिक बताते हैं। चंदूभाई और शुद्धात्मा को अलग रखने का, यह सब से उच्च तरीका है। उस सामायिक में आपको इस तरह बोलते रहना है,

1. 'हे शुद्धात्मा भगवान! आप जुदा हैं और चंदूभाई जुदा हैं।'

2. 'हे शुद्धात्मा भगवान! आप रियल हो और चंदूभाई रिलेटिव हैं।'

3. 'हे शुद्धात्मा भगवान! आप परमानेन्ट हो और चंदूभाई टेम्परेरी हैं।'

ऐसा अड़तालीस मिनट तक बोलते रहना है।

उसमें आपको जो शक्तियाँ कम पड़ती हों वे सामायिक में शुद्धात्मा भगवान से माँग सकते हैं। इससे बिल्कुल जुदा ही हो जाएँगे। दिन में जब भी याद आए तब पाँच-पच्चीस बार ये तीन वाक्य बोलेंगे, तो भी तुरंत भीतर सब अलग हो जाएगा और क्लियर (स्वच्छ) हो जाएगा सब।

'मैं' और 'चंदूभाई' दोनों अलग ही हैं, ऐसे मुझे अलग रहने की शक्ति दीजिए। मुझे आपकी तरह जुदा रहने की शक्ति दीजिए और चंदूभाई जुदा रहें। हे दादा भगवान! आपकी कृपा बरसे। 'चंदूभाई क्या कर रहे हैं', उसे मैं देखूँ और जानूँ, वही मेरा काम।

जय सच्चिदानंद

दादाजी की जागृति की झलक

जागृति किसे कहते हैं? हमें कृष्ण भगवान का नाम लेते ही उनका जो चित्र देखा है, वह याद आता है। चित्र भी दिखाई देता है और कृष्ण भगवान मूल स्वरूप में भी दिखाई देते हैं, ऐसी जागृति रहती है। महावीर भगवान का नाम लो, तो भगवान महावीर भी दिखाई देते हैं और शब्द भी बोले जाते हैं, उसे जागृति कहते हैं। यह तो, जब शब्द बोलते हैं उस क्षण शब्द में जागता है परंतु उसके मूल में नहीं जागता। हम जो एक-एक शब्द बोलते हैं, उस शब्द में, हम उसमें जागृत ही होते हैं। जागृति ऐसी होनी चाहिए। सीमंधर स्वामी शब्द बोलते ही हमें फोटो-वगैरह सब दिखाई देता है, मूल स्वरूप भी दिखाई देता है, सभी प्रकार की जागृति रहती है। जागृति निरंतर रहती है, उसी से अंत में पूर्णाहुति होती है। संसार अर्थात् अजागृति। भगवान बंद आँखों से जागते थे, हम भी बंद आखों से जागते हैं।

प्रश्नकर्ता : किसी की बात ऐसी होती है कि हँसी आ जाती है, यह किस तरह का उपयोग है दादा? आपका कैसा उपयोग रहता है?

दादाश्री : हमें हँसी नहीं आती। मुझे तो हँसी ही नहीं आती न! कभी भी हँसा ही नहीं। और हमें यदि कभी आ भी जाए, तब भी उपयोग रहता है। हम चूकते नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : किस प्रकार का उपयोग रहता है आपका?

दादाश्री : भला, उसका कैसा तरीका? जागृति ही पूरी! संपूर्ण! दीया संपूर्ण रूप से जलता ही रहता हो तो उसमें तरीका कैसा! उसका तरीका होता है क्या?

प्रश्नकर्ता : कैसी जागृति रहती है?

दादाश्री : दीया जलता रहे, ऐसा रखते हैं हम। अरे! लाइट जलती ही रहती है। निरंतर दीया प्रज्वलित रहता है फिर। रात-दिन तीर्थंकरों को जो निजदोष दिखाई देते हैं, उसी कक्षा के दोष हमें दिखाई देते हैं। दुनिया तो वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकती कभी भी, लेकिन ऐसे (सूक्ष्मतम) दोष दिखाई देते हैं। तीर्थंकरों को जो दिखाई देते हैं, वे।

प्रश्नकर्ता : सभी के?

दादाश्री : नहीं-नहीं। हमारे ही। सभी के दोषों का मुझे क्या करना है? हम तो दूसरे किसी के दोष ही नहीं देखते। दिखाई ज़रूर देते हैं लेकिन दोषित नहीं देखते। हम तो निर्दोष ही देखते हैं। दोष देखते ही निर्दोष देख लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : यदि महात्मा से भूल हो रही हो तो दादा को कहना चाहिए न कि यह भूल हो रही है?

दादाश्री : नहीं-नहीं। मुझे क्या लेना-देना?

प्रश्नकर्ता : पूछने पर नहीं कहना चाहिए?

दादाश्री : वे तो खुद को ही ढूँढ निकालने हैं। हम ऐसा कुछ नहीं कहते। हमारा कहा हुआ तो, फिर क्या होगा कि वह तो थ्योरी में चला जाएगा। ऐसा तो हम कहते ही नहीं हैं न!

प्रश्नकर्ता : यदि खुद देखे तो प्रैक्टिकल में आ गया, कहा जाएगा?

दादाश्री : वह प्रैक्टिकल। प्रैक्टिकल में आए न, वही सही है। अर्थात् हम किसी के दोष नहीं बताते कि आपके इतने दोष हैं, सुधारना। ऐसा सब नहीं कहते।

प्रश्नकर्ता : हमें सहज रूप से, कभी ऐसे नैमित्तिक रूप से टोक देते हैं।

दादाश्री : वह तो सहज रूप से हो जाता है किसी के साथ। कोई बहुत नज़दीकी हो न, तो उनके साथ ऐसा हो जाता है। वर्ना तो नहीं होता हम से। क्योंकि उसे खुद को दिखाई दे तभी काम का है। वर्ना यदि मैं कहूँ न, तो वह उल्टा उसके पास पड़ा रहेगा एक तरफ और उसी में ध्यान रहेगा। वह क्या काम आएगा? यदि विधियाँ करे, सेवा करे तो फिर जागृति बढ़ती जाएगी भीतर!

प्रश्नकर्ता : आपको तो हर एक बात में कम्प्लीट जागृति रहती है।

दादाश्री : देखो, मुझे इस संसार के बारे में बिल्कुल भी जागृति नहीं रहती। आज क्या 'वार' है, उसकी भी जागृति नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : दादा आप कहते हैं कि 'इसमें मुझे जागृति नहीं रहती' लेकिन यह बात सेट नहीं होती।

दादाश्री : कैसे सेट होगी?

प्रश्नकर्ता : तो फिर ज्ञान है इसीलिए सब चीजें उनके लक्ष (जागृति) में रहती हैं लेकिन उनके प्रति उपेक्षा रहती है?

दादाश्री : नहीं। उनकी स्मृति नहीं रहती। स्मृति नहीं रहे तो उपयोग नहीं रहता। इसलिए दखल नहीं रहता। वहाँ पर आत्मा की वृत्ति ही नहीं रहती न उस तरफ की। देह के साथ काम की बातें करते हैं, बाकी सब करते हैं। स्थिरता पूर्वक जागृति रखते हैं, स्मृति नहीं।

जिनका निरंतर 'केवल' में ही मुकाम है, वे अन्य किसमें हो सकते हैं? निरंतर 'केवल' में ही मुकाम है, एब्सल्यूट (परम स्थिति) में! इसीलिए तो हमने कहा, आप पूछ रहे थे न कि, '(यदि) हम आपको तीर्थंकर कहें तो उसमें क्या हर्ज है?' नहीं, यदि तीर्थंकर कहोगे तो यह काल खुद विरोध करेगा। अभी तो यही फुल स्टेज है, इसलिए ऐसा कहा है न! अब यह भीतर जो फुल स्टेज है, उसे 'दादा भगवान' कहते हैं। बाहर ३५६ डिग्री हुआ और भीतर फुल स्टेज में हैं।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

हरियाणा

हिसार **दिनांक : 20 मार्च** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9896871690
स्थल : श्री हनुमान मंदिर, बुधाला संत स्थान सभा, सेक्टर 14, हिसार.

रोहतक **दिनांक : 20 मार्च** **समय :** दोपहर 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 9855199209
स्थल : हाउस नं. 1109, सेक्टर 3 (पी), हर्बल पार्क के पास, रोहतक.

महाराष्ट्र

औरंगाबाद **दिनांक : 20 मार्च** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : संत कँवर कुटिया हॉल, सिन्धी कॉलोनी, मोंढा नाका, जालना रोड, औरंगाबाद.

उड़ीसा

भुवनेश्वर **दिनांक : 20 मार्च** **समय :** दोपहर 5-30 से 7 **संपर्क :** 7077902158
स्थल : रोटरी क्लब, चित्रकूट आश्रम के पास, यूनिट - 9, भुबनेश्वर.

कटक **दिनांक : 21 मार्च** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 8763090042
स्थल : गाँधी भवन, सन शाइन फिल्ड के पास, बखराबाद, कटक.

नीमापाडा **दिनांक : 22 मार्च** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9778329738
स्थल : चैतन्य निबश, सर्बापाडा, निमापाडा, पूरी , (निमापाडा - कोर्णार्क मेन रोड़)

भुवनेश्वर **दिनांक : 23 मार्च** **संपर्क :** 7077902158
समय और स्थल की जानकारी के दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

उत्तरप्रदेश

वाराणसी **दिनांक : 20 मार्च** **समय :** सुबह 11 से 2 **संपर्क :** 9795225041
स्थल : पराड़कर स्मृति भवन, टाउन हॉल, वाराणसी.

मुगलसराय **दिनांक : 20 मार्च** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 7860798830
स्थल : पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर (मुगलसराय).

प्रयागराज **दिनांक : 21 मार्च** **समय :** दोपहर 2 से 4 **संपर्क :** 9935378914
स्थल : विज्ञान परिषद् प्रयागराज, महर्षि दयानंद मार्ग, प्रयागराज.

झाँसी **दिनांक : 7 अप्रैल** **संपर्क :** 9415588788
समय और स्थल की जानकारी के दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

आसाम

गुवाहाटी **दिनांक : 29 मार्च** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 8011249648
स्थल : शिव मन्दिर, लेचियानगर, पातरकुछि, बशिष्ठ चारिआलि, गुवाहाटी.

बक्सा **दिनांक : 30 मार्च** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 8011249648
स्थल : दादा भगवान परिवार, चन्तापारा, बाक्सा (बि.टि.आर) - शिव मन्दिर के नजदीक, बक्सा.

पश्चिम बंगाल-बिहार-झारखंड

एठेल्बरी **दिनांक : 31 मार्च** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9382899417
स्थल : नया बाज़ार, एथेल्बरी, जिल्ला - अलीपुरद्वार.

मुजफ्फरपुर **दिनांक : 2 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9939853447
स्थल : हॉटल रेणुका पैलेस, मौलश्री के सामने, खबरा शिव मंदिर के निकट, NH-28, मुजफ्फरपुर, बिहार.

पटना **दिनांक : 3 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 7 **संपर्क :** 9661910609
स्थल : महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड़, दिनकर गोलंबर के पास, पटना.

बोकारो **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 7765045788
स्थल : चास, गुजराती कॉलोनी, जैन भवन, बोकारो.

सिल्ली **दिनांक : 5 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3 से 6 **संपर्क :** 9386982589
स्थल : जगदीश भवन, निचे टोला, सिल्ली, रांची.

राँची **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 7903656064
स्थल : 2283 ए१/ए, शिव भोला कुटिया, नन्द नगर, अरगोड़ा थाना के पीछे, हरमू, रांची.

मध्यप्रदेश

ग्वालियर	**दिनांक : 8 अप्रैल**	**संपर्क :** 9926265406
उज्जैन	**दिनांक : 9 अप्रैल**	**संपर्क :** 9009818575
इन्दोर	**दिनांक : 10 अप्रैल**	**संपर्क :** 9893545351
अंजड़	**दिनांक : 11 अप्रैल**	**संपर्क :** 9617153253
खरगोन	**दिनांक : 12 अप्रैल**	**संपर्क :** 9425653302
होशंगाबाद	**दिनांक : 13 अप्रैल**	**संपर्क :** 9424402646
रायसन	**दिनांक : 14 अप्रैल**	**संपर्क :** 9425190511
विदिशा	**दिनांक : 14 अप्रैल**	**संपर्क :** 9425190511
भोपाल	**दिनांक : 15-17 अप्रैल**	**संपर्क :** 9425190511

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication :** Monthly
3. **Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,
   Address : B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.
4. **Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
   Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above. (As per No.4)
6. **Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
   Address : same as above. (As per No.4)

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date : 15-03-2022

sd/-
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

20 मार्च (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

कोलकाता

8-9 अप्रैल (शुक्र-शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग और 10 अप्रैल** (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : बेल्विडीर पार्क क्लब, 23 बेल्वेदर रोड, भवानी भवन के पास, अलीपुर कोलकाता. **संपर्क :** 9830131411

वाराणसी

12-13 अप्रैल (मंगल-बुध), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग और 14 अप्रैल** (गुरु), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, तेलियाबाग क्रॉसिंग, वाराणसी. **संपर्क :** 7007270283

दिल्ली

15-16 अप्रैल (शुक्र-शनि), शाम 6 से 9 - **सत्संग और 17 अप्रैल** (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : यूनाइटेड इंग्लिश मीडियम स्कूल, 17 राज निवास मार्ग, सिविल लाइन्स, दिल्ली. **संपर्क :** 9810098564

भोपाल

19-20 अप्रैल (मंगल-बुध), शाम 6 से 8-30 - **सत्संग और 21 अप्रैल** (गुरु), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : कैंपियन स्कूल, ई / 7, अरेरा कॉलोनी, शाहपुरा लेक के पास, भोपाल. **संपर्क :** 7879518779

हैदराबाद

23 अप्रैल (शनि), शाम 6 से 9 - **सत्संग और 24 अप्रैल** (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : श्री हनुमान व्यायामशाला स्टेडियम, सुल्तान बाजार, हैदराबाद. **संपर्क :** 9393052836

25 अप्रैल (सोम), शाम 6 से 9 - **सत्संग**

स्थल : बिरला साइंस म्यूजियम, आदर्श नगर, हैदराबाद. **संपर्क :** 9393052836

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर - वर्ष 2022

8 से 12 मई - सत्संग शिविर

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। रजिस्ट्रेशन आवश्यक है।

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2022

18 से 22 मई - सत्संग शिविर

21 मई - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी अप्रैल 2022 के अंक में दी जाएगी।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'अरिहंत'** चैनल पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, रात 8 से 9
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 **(सिर्फ गुजरात राज्य में)**
- **'इन्डिया न्यूज़ गुजरात'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 8
- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 **(हिन्दी में)**
- **'उड़ीसा प्लस'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 **(हिन्दी में - केवल उड़ीसा राज्य में)**
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 **(मराठी में)**
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 **(कन्नड़ा में)**
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर सोमवार से गुरूवार शाम 7-30 से 8 **(कन्नड़ा में)**

USA - Canada

- **'TV Asia'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8 **EST**

U K

- **'MA TV'** पर रोज़ शाम 5-30 से 6-30 **GMT**

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 **(हिन्दी में)**

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 **(हिन्दी में)**

USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30
  (डिश टी.वी. चैनल **UK** - 849, **USA** - 719) **(गुजराती और हिन्दी में)**

मार्च 2022
वर्ष-17 अंक-5
अखंड क्रमांक - 197

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

अलग देखने से कोई भी असर स्पर्श नहीं करता

'व्यवस्थित' प्रेरणा देता है और प्रेरणा से सब चल रहा है। उसे 'हमें' 'देखते' रहना है। फिल्म और फिल्म देखने वाले, दोनों को थकान नहीं होती। देखने वाले को थकान नहीं होती, न ही फिल्म को थकान होती है। देखने से कोई असर नहीं होता। जैसे-जैसे आप 'देखते' जाओगे न, वैसे-वैसे आपकी 'देखने' की शक्ति बढ़ती जाएगी। क्योंकि शक्ति मल्टिप्लाइ होती जाती है और शुद्ध होता जाता है। अंदर आनंद उत्पन्न होता है। यह तो, अगर सिर दु:खे तो कहेगा, 'मेरा सिर तो बहुत दु:ख रहा है'। अरे, लेकिन तेरा दु:ख रहा है या चंदूभाई का दु:ख रहा है? तू तो शुद्धात्मा है।' तो कहेगा 'हाँ, मैं तो शुद्धात्मा हूँ। यह तो चंदूभाई का दु:ख रहा है।' अब चंदूभाई का सिर दु:ख रहा है, उसमें, 'मेरा सिर दु:खा', ऐसा कहने से असर हो गया! देखने और जानने से कोई असर स्पर्श नहीं करता।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.